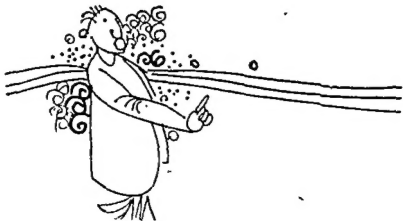




चीफ मिनिस्टर



विद्या प्रकाशन मन्दिर  
नई दिल्ली-2



# चीफ मिनिस्टर

विजय तेंडुलकर



© लेखक :

मूल्य : 30.00

संस्करण : 1991

प्रकाशक : विद्या प्रज्ञाशान मंदिर

1681, दरियागंज, नई दिल्ली-2

मुद्रक हिन्दुस्तान आफसेट प्रिंटर्स शाहदरा, दिल्ली-32

---

CHIEF MINISTER by Yuaya Tendulkar

विजय तेंडुलकर के मूल मराठी नाटक  
'भाऊ मुरारराव'  
का हिन्दी अनुवाद

अनुवादिका  
सलित बेसाई

नाटक के मंचन की अनुमति अनुवादिका से प्राप्त करना आवश्यक है। पत्र-  
व्यवहार के लिए पता :

सलित बेसाई  
१० बी; बड़ा बाजार मार्ग  
पुराना राजेन्द्र नगर  
नई दिल्ली-११००६०



## चीफ मिनिस्टर

पुरुष-पात्र

मुरारराव : चीफ मिनिस्टर (मुख्यमंत्री)

देसाई : हर सत्ताधारी से चिपटे रहने वाला चाटुकार

भोगरे : चीफ मिनिस्टर का पी० ए०

नानालाल : एक छोटा-सा व्यापारी

टी० टी० : विरोधी दल का एम० एल० ए०

रावसाहब : चीफ-मिनिस्टर के पार्टी के हार्ड कमाण्ड का सदस्य तथा  
कैबिनेट मंत्री

सुदाम : मंत्रिमण्डल का सदस्य—कैबिनेट मंत्री

भादमी (सिवकर) : एक सामान्य व्यक्ति, जिसने कभी मुरारराव के लिए  
अपनी किडनी दी थी

सदावर्त : सरकारी अधिकारी  
सिपाही, नौकर, आदि

स्त्री-पात्र

मंजुला : चीफ मिनिस्टर की पत्नी





## पहला अंक

(सायंकाल । टेबल पर हार और फूलों के गुच्छों का बहुत बड़ा ढेर रखा है ।)

मुरारराय : (टेलिफोन पर बात कर रहे हैं ।) नहीं-नहीं मैं सिर्फ निमित्त मात्र हूँ । विजय तो आप सबकी शुभकामनाओं का फल है । हो हों । जिम्मेदारी बहुत बड़ी है । काम आसान नहीं है । सम्पादकीय लिखेंगे ? लिखिए, जरूर लिखिए, लेकिन फिजूल ज्यादा मेरी तारीफ मत कीजिए । मैं बहुत छोटा आदमी हूँ । पार्टी के नेताओं की कृपा है । नहीं, निर्णय एकमत से ही हुआ था । आपकी जानकारी गलत है । बिल्कुल गलत । देखिए ऐसा है, मतभेद तो होते ही हैं, पसन्द-नापसन्द की बात भी होती है, आखिर पार्टी इन्सानों से ही बनती है । फंसला एकमत से हुआ था । रावसाहब ने खुद ही तो मेरे नाम का सुझाव दिया था । चौधरी साहब ने अनुमोदन किया था ।

(देमाई उनके पीछे एक मोटा हार लिए फोटोग्राफर से साथ खड़ा है ।)

आइये । पहले अपोइष्टमेण्ट लेकर आया करें । कल सुबह दिल्ली जा रहा हूँ । शाम को वापिस आऊँगा । ठीक है । अभी-अभी जरा फुरसत मिली है । सुबह में भीड़ सगी हुई थी । टेलीविजन के लिये राज्य के नाम अभी सन्देश भी रिकार्ड

करवाना है। आज शर्म को ही प्रसारित होगा। चलता है। आज ही का तो दिन है। अभी पीछे ही उस बीमारी से उठा है। लेकिन ज्यादा मेहनत से अभी भी थकान हो जाती है। नहीं, अब तबीयत बिल्कुल ठीक है। ईश्वर की कृपा है। और हाँ, आज के पेपर में आपने हमारा वह इन्तहार डाल दिया, उसके लिये धन्यवाद। रात जरा देर हो गई थी देने में। लोग कुछ कह तो नहीं रहे? जिस तक पहुँचना चाहिये, उस तक पहुँच गया, सभी फायदा है। देखते हैं। अच्छा थैंक यू। (रिसीवर रख कर वहीं अनामने-से खड़े रहते हैं।)

देसाई : (पीछे से) मुबारक हो !

मुरार : (घूमकर) कौन ?

देसाई : साहब मैं, अनन्त देसाई। मुबारक हो ! बहुत-बहुत मुबारक हो ! जरा देर हो गई। (सामने आकर जबरदस्ती हार डालता है। मुरारराव जम्हाई रोकते हैं। फोटोग्राफर कोठी लेता है।) बहुत अच्छा हुआ ?

मुरार : थैंक यू।

देसाई : आपका मुख्यमन्त्री पद के लिये चुना जाना, इस राज्य के लिये बड़े सौभाग्य की बात है। अब तो यह राज्य हर बात में आगे रहेगा। इसमें शक की कहीं कोई गुंजाइश ही नहीं।

मुरार : अच्छा !

देसाई : विरोधी तक कह रहे हैं... यह सम्मान आपका नहीं, पूरे राज्य का सम्मान है।

मुरार : (नौकर के हाथ में पकड़ी ट्रे में से दो पेड़े निरपेक्ष भाव से देते हुए) लीजिए पेड़े लीजिए। चाय लेंगे ? (फोन बजता है। मुरारराव की मुद्रा चिढ़ी हुई)

देसाई : मैं देखूँ साब, किसका फोन है ? (मुरारराव इशारे से मना करते हुए फोन उठाते हैं। देसाई फोटोग्राफर के कान के पास

बात करके उसे वापस भेज देता है ।)

मुरार : (रिसीवर में) कौन आई० जी० पी० बसाले ? क्या कह रहे हैं ? बात करना चाहते हैं ? दीजिये. लाइन दीजिये । (जम्हाई रोकते हुए) श्रेय तो बड़ों को ही है । मैं बहुत छोटा इन्सान हूँ । आप सबके सहयोग से जो भी कुछ बन पड़ेगा, करूँगा । (जम्हाई रोकते है ।) हाँ-हाँ मालूम है । क्या कह रहे है ? (एकदम चौकन्ने हो जाते है, और फिर ढीले पड़ जाते हैं ।) मैंने सोचा, मिल गया । अभी तक नहीं मिला ? पता गलत है, तो सही पता ढूँढना भी तो आपका काम है बसाले ! नाम गलत होने की कोई गुंजाइश नहीं है । नहीं, मुझे नहीं लगता । चाहे कहीं से भी ढूँढ लाइये । दैटम युअर हैडेक । पुलिस थ्रोस है आपके पास, कोई ऐरे-गैरो की सेना तो नहीं इकट्ठी की गई । चौबीस घण्टे देता हूँ आपको । कोना-कोना छानिए पर उसे जिन्दा—या नहीं—जिन्दा ही—लाकर हाजिर कीजिए । अब और बहाने नहीं सुने जाएँगे ।

(रिसीवर पटक कर विचारमग्न खड़े रहते है ।)

देसाई : किसके बारे में बात हो रही थी साँव ? वैसे ही पूछ रहा हूँ—

मुरार : पहले के मुख्यमन्त्रियों को भी आप ऐसे ही पूछते होगे देसाई ?

देसाई : (हँसते हुए) हाँ-हाँ साब ! अपनी तो हाजिरी पिछले दस

सालों में रोज लग रही है यहाँ । आप तीसरे सी० एम० है ।

पर आप इतने डिस्टर्ब किसलिए है ? मिलना किसे चाहते है ? हम से आएँगे उसे ढूँढ़कर... उसमें है क्या ?

(टेलीफोन बजता है ।)

मुरार : (रिसीवर पर) यैस ?

मोगरे : (लाइन पर) साहब मैं मोगरे । नानालाल जमनादास आए हैं आपके अभिनन्दन के लिये ।

मुरार : नानालाल ! अच्छा-अच्छा, वी नानालाल । भेजिये उसे ।

(नानालाल फूलों का एक बड़ा-सा बुके लेकर आते हैं।)

देसाई : (नानालाल को अपनत्व से) आइये नानालाल ।

नानालाल : (देसाई की परवाह ना करके सीधे मुरारराव को गुच्छा देकर शेकहेण्ड करते हुए) बेरी ग्लैंड सर ! हार्टी कांफ्रेंट्स ! मैं नानालाल हूँ, एक छोटा-सा ध्यापारी । सोशल वर्क भी करता हूँ, और आप को तो धुरु से ही बहुत चाहता हूँ । आय एम हैपियेस्ट टूडे गाह्व ! हालात के मुताबिक बहुत काबिल आदमी चुना है आपकी पार्टी ने । ग्रेंट ईर्वेंट । ग्रेन डोलर एमोसिएशन और अन्ध सेवा समिति की ओर से मैं आपका अभिनन्दन करता हूँ ।

मुरार : (पेड़े देते हुए) पेड़े लीजिये । कुछ (जम्हाई रोकते हुए) चाय वर्ग ?

नानालाल : नो, नो, थैंक यू बेरी मच, मैं तो मिर्क अपनी खुशी जताने चला आया । हमारी तरफ से आपको फुल मपीट है साह्व । एमोसिएशन और समिति ने तो प्रस्ताव भी पास कर दिया है । अब आपका ज्यादा ध्यान नहीं लेना । टाइम इज मनी । चलता हूँ । (नमस्कार करके चला जाता है ।)

देसाई : नानालाल एकदम फिट आदमी है साव ! अपना इटरैस्ट अच्छी तरह जानता है । अब ग्रेन डोलर्स और अन्धों में कोई सम्बन्ध है क्या ? लेकिन यह है कि दोनों संस्थाओं में बराबर मौजूद है ।

मुरार : देसाई, हर कोई अपना इटरैस्ट देखता है—

देसाई : यही तो मैं कह रहा हूँ । नानालाल भी तो आम लोगों जैसा ही है । लेकिन वो कौन है—जिसे आप मिलना चाहते हैं ? जिसे दूँड निकालना चाहते हैं—विगेधी दल के एम० एल० ए० टी० टी० आते हैं । (पीठ पीछे कुछ छिपाये हुए)

मुरार : (टी० टी० का देखकर स्तब्ध होते हैं) आइये, आइये टी० टी०

आप भी आये हैं आज के कुम्भ मेले में ?

टी०टी० : कुम्भ मेला खत्म हो गया होगा, यही सोचकर आया था।  
(गुलाब का फूल सामने करके मुरारराव को नजर करते हुए)  
यह हमारे मालिक-मकान के बाग का है। हमारा बाग तो नासिक में रह गया। (सिर्फ फूल देखकर मुरारराव थोड़े नाराज दिखाई देते हैं।) छोटा है, पर बहुत सुन्दर लगा इसी-  
लिए ले आया ! आपका यश भी इस फूल की खुशबू की तरह ही फैले, बगैरा-बगैरा... याने ऐमे मौके पर कुछ काव्यात्मक, कुछ सुन्दर-सुन्दर शब्द बोलने की रीत है ना, इसीलिये। वैसे तो गुलाब खुद ही बोल रहा है अपनी खुशबू से। क्यों देसाई, आपने चीफ-मिनिस्ट्रों का ठेका ही ले लिया है क्या ? हर चीफ-मिनिस्टर के स्वागत के लिए आप, विदाई के लिए आप, जन्म-दिन पर आप, हर जश्न में आप, पता नहीं कहाँ-कहाँ किसलिए आप मौजूद होते हैं—

बेसाई : (हँसकर) हैं, हैं, अभी वैसे कुछ हुआ नहीं है इस राज्य में टी० टी०। इतना जरूर है, जो भी यहाँ का मुख्यमंत्री होता है उसकी दीर्घायु हुआ करती है—

टी०टी० : होती होगी, होती होगी। वह अमर भी हो सकता है।

मुरार : पेड़े खाइये टी० टी०, मुंह मीठा कीजिये पहले... (पूरी जम्हाई लेकर) कब से आ रही थी, मौका ही नहीं मिला ! (पेड़े देते हुए) लीजिये। कल से विधान सभा में तो कड़ुवे भाषण देने ही हैं।

टी०टी० : आपने हमारी थोड़ी मुश्किल कर दी है मुरारराव !

मुरार : मुश्किल, आपकी कैसी मुश्किल ? सामने चाहे मुरारराव हो या खुद ईश्वर, आपकी तोप तो गरजती ही रहती है। आप अपना काम शुरू रखिये टी० टी०; हम भी मयाशक्ति अपना काम करते रहेंगे। संघर्ष जारी रहना ही चाहिये।

टी०टी० : हाँ, संघर्ष से जरा जागरूकता रहती है विधानसभा में, वरना विधान सभा तो शयनागार ही हो जायेगी। वैसे आपकी पार्टी के कुछ बैंक-बैंचर्स ने उसे शयनागार बना ही डाला है। परसों आपका राज बह हंबीर थोराल, अर्थमंत्री को उत्तर देने के बख्त कैसे आराम से सो रहा था, देखा नहीं आपने ?

मुरार : शर्म आती है ऐसे मौकों पर, लगता है क्या यही है हमारी लोकशाही ?

(गले में कुछ अटका हुआ-सा महसूस करते हैं।)

टी०टी० : क्या हुआ ?

मुरार : टेलिविजन के लिये सुबह राज्य के नाम मंदेश रिकार्ड करवाया था, उसी की याद आ गई। मैंने उसमें लोकतंत्र पर बड़े गौरवपूर्ण विचार रखे हैं। क्या लेंगे ? चाय, कॉफी ?

टी०टी० : सिर्फ चाय कॉफी ?

मुरार : (हँसते हुए) तब फिर क्या चाहिये ?

टी०टी० : सिर्फ चाय कॉफी से आज का दिन सँलियेट करना ठीक नहीं है मुरारराव !

मुरार : यह सम्मान से ज्यादा जिम्मेदारी है टी० टी०, मैंने अपने टी० बी० संदेश में भी यही कहा है। काम सचमुच बहुत कठिन है।

देसाई : आप तो मजाक कर रहे हैं सॉब ! "मैन ऑफ द कायमिस"—मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों में दमकने वाले इन्सान—आपका वर्णन तो इन्ही शब्दों में करना पड़ेगा।

टी०टी० : देसाई, आपका मक्खन लगाना हो गया शुरू जोर-शोर से ?

देसाई : वह रुका कहाँ था ? एक से एक गुणी नेता मिल रहे हैं हमें... हम करें भी तो क्या करें ?

मुरार : अच्छा देसाई, फिर मिलेंगे।

देसाई : (बुरा न मनाते हुए) हाँ हाँ, जरूर। मैं तो आता ही रहूँगा। अच्छा टी० टी०। (अन्दर की ओर जाते हुए) जब आया हों

हैं तो भाभी साहिब को भी एक बार मुबारकबाद देता जाऊँ...

टी०टी० : (मुरारराव को) अब आप से क्या कहूँ? इतना जरूर है कि ऐसे चमचों से जरा सावधान रहिये।

मुरार : सब को अच्छी तरह पहचानता हूँ मैं टी० टी०।

(हाथ के गुलाब से खेलते हुए)

टी०टी० : मूढ में नहीं लगते आप आज। इस अधिकार और सम्मान पाने की खुशी कम से कम एक दिन तो आप मनाते। फेरीवाले से जिन्दगी की शुरुआत करके आज आप मुख्यमंत्री तक बन चुके हैं। उम पर जिस खूबी से एक-एक करके आपने पहले वाले सी० एम० को अकेला और निहत्या कर दिखाया... और हाँ, वह परसों वाला निर्णयात्मक प्रस्ताव तो बहुत लाजवाब रहा। अभी कुछ दिन पहले ही तो... आपका एक प्रकार से पुनर्जन्म हुआ है। गह दिन देखने के लिये आज आप भोजूद हैं, यही क्या कम सौभाग्य की बात है, मुरारराव ! केवल बड़ों की क्यों ? आप पर तो ईश्वर की भी बड़ी कृपा है।

मुरार : हाँ टी० टी० ; इसमें कोई शक नहीं कि ईश्वर की ओर प्रधानमंत्री तक की मुझ पर बड़ी कृपा है। लेकिन आज सुबह से मैं जरा बेचैन हूँ।

टी०टी० : क्यों ? प्रधानमंत्री की कृपादृष्टि के लिये ? (धीमे स्वर में) कोई और नई खबर है क्या ?

मुरार : नहीं, जिसकी वजह से मैं आज जिन्दा हूँ, उससे मिलूँ, उस के लिये कुछ करूँ, ऐसा बारबार सुबह से मुझे कचोट रहा है...

टी०टी० : (निराश हो कर) अच्छा, अच्छा। वो जिसने अपनी किडनी दे कर आपकी जान बचाई थी ? मिलिये उससे। जरूर कीजिये उसके लिये कुछ। अब तो आसानी से आप उसकी मदद कर सकते हैं। जिस-जिस के लिये कुछ करने को आपका जी चाहता है, उन सबका भला करने का समय अपने आप चलकर आ गया



है अब तो आपके पास ।

मुरार : (थोड़ा निराश हो कर) पर वो है कहाँ ? उसे मिलना चाहिये टी० टी० । सब के लिये तो नहीं, पर उसके लिये मैं जरूर कुछ करूँगा । (फोन बजता है, मुरारराव उत्सुकता से फोन उठाते हैं ।) यैस ! कौन ?

मोगरे : (फोन पर) साहब मैं, मोगरे । 'लोकतंत्र बचाओ' संस्था के कुछ प्रमुख कार्यकर्ता आए हैं । आपका सरेआम सत्कार करना चाहते हैं । चन्दा और डेट माँग रहे हैं । मिलने के लिये भेजूँ ?

मुरार : (फोन पर) देखते हैं । सात बजे पार्टी की मीटिंग है । उसके बाद राज्यपाल से मिलने जाना है । अगर वे राजी हो तो उन्हें रात देर से बुला लीजिये । और कहिये चन्दा ऐसे नहीं मिलेगा । चन्दा लेकर सत्कार न करने वाले बहुत देखे हैं आजकल । यह भी एक तरह का करप्शन ही है, हमें इसे बढ़ावा नहीं देना चाहिये ।

मोगरे : (लाइन पर) अच्छा साहब, कहे देता हूँ ।

मुरार : (जल्दी से) वह आखिर की बात मत बताना—नहीं तो सब गड़बड़ कर दोगे । (अन्दर से देसाई आकर पीठ किये हुये मुरारराव को अपनी गर्दन झुकाकर अभिवादन करता है । और टी० टी० की तरफ हँसकर, देखकर चला जाता है । मुरारराव फोन पर ही बात कर रहे हैं ।) और हाँ, आई० जी०पी० वसाले को फिर एक बार रिग करके डोट—नहीं, याद दिलाइये, कहिये किसी भी हालत में उसे यहाँ जरूर आना चाहिये । नहीं तो उसकी रिटायरमेंट पक्की ।

मोगरे : (लाइन पर) बता देता हूँ साहब !

मुरार : (फोन पर) और हाँ, अलग-अलग विभागों के सस्पेंड किये जाने वाले अधिकारियों की सूची तैयार हो गई ?

मोगरे : सूची तो बहुत बड़ी हुई जा रही है साहब—

मुरार : (फोन पर) और भी बड़ी कीजिये। चाहे तो बाद में सबको रीइन्स्टेट कर लेंगे, पर फिलहाल तो इस सुबे में हमारी अधिकार प्राप्ति जोर-शोर से पता लगनी चाहिये सबको। (पीछे से मंजुलावाई आती है। टी० टी० हँसकर उन्हें अभिवादन करते हैं।)

मुरार : (फोन पर) ओर—हेलो—रेडियो पर वह अनाउन्समेंट हो गई क्या मोगरे ?

मोगरे : (लाइन पर) कौन-सी साहब ? हाँ...हाँ...पर उसे सुनने के लिये समय कहाँ मिला ? चलो खैर रेडियो तो अपना ही है। अनाउन्समेंट हो ही गई होगी। कल इसकी पूरी व्यवस्था कर दी थी...

मंजुसा : अनाउन्समेंट हो चुकी है।

(मुरारराव घूमकर देखते हैं। रिसीवर रखने लगते हैं।)

मंजुसा : जरा इधर दीजिये रिसीवर...मोगरे से बात करनी है मुझे... (रिसीवर लेकर) मोगरे, कल सुबह ही उस इण्टीरियर डेकोरेटर को बुलवा लीजिये। मुख्यमंत्री के वंगले पर शिफ्ट करने से पहले वहाँ का सारा फर्नीचर बदलवाना है। पहले का सारा निकलवा देना है। वहाँ सब कुछ नया होना चाहिये। (रिसीवर रख देती है।) मैंने सुनी है अनाउन्समेंट रेडियो पर।

मुरार : क्या ?

मंजुसा : ए० एच० दो सौ सत्तर से मिलने वाले ब्लड ग्रुप के सिन्दकर नाम के आदमी ने कुछ समय पहले एक मरणोन्मुख इन्सान को अपनी किडनी दे कर उपकृत किया था। वही इन्सान अब सिन्दकर को किसी जरूरी काम से मिलना चाहता है। श्री सिन्दकर जहाँ कहीं भी हों उस आदमी से सम्पर्क करें। हो गई आपकी तसल्ली ?

मुरार : इससे क्या तसल्ली होगी ? वह मिलें तब तो...

भंजुसा : जब इतनी कोशिश हो रही है, तो जरूर मिल जायेगा। है ना टी० टी० ? ज्योतिषी को बुलाकर उसे कुन्डली भी दिखाई दी, उसने भी कहा, जरूर मिल जायेगा—कोई मामूली ज्योतिषी नहीं, राष्ट्रपति का चुनाव परिणाम बताने वाला ज्योतिषी है वह।

टी०टी० : फिर तो जरूर मिल जायेगा। ना मिलने का कोई कारण ही नहीं है! हाँ अगर किन्हीं देने वाला वह आदमी आज अस्तित्व में ही ना हो, तो बात दूसरी है।

मुरार : नहीं-नहीं होगा, कैसे नहीं ?

भंजुसा : इनके तो दिनों-दिमाग पर वही छाया हुआ है कल से। रात-भर तरपते रहे। सुबह-सुबह मुझे उठाकर बोले, उसी की बदौलत मैं आज यह दिन देख रहा हूँ। ऐसा संगता है, सब कुछ उसी का दिया हुआ है, यह दिल की घड़कन, यह धरीर, यह आँखें—सब कुछ उसी के दम पर है। कह रहे थे, मैं वही हूँ। उस के शरीर के एक भाग से ही मेरा आज अस्तित्व है। उस के महादान से ही आज मैं जिन्दा हूँ। -

टी०टी० : (आश्चर्य से) अरे मुरारराव ! क्या यह सच है ?

भंजुसा : उसे महात्मा कह रहे थे।

मुरार : (जरा सकुचाते हुए) शब्द गलत हो सकता है। आदत से आ गया जुबान पर। लेकिन इसमें झूठ भी क्या है ?

(टेलिफोन बजता है। मुरारराव टेलिफोन उठाकर)

मुरार : यैस ?

मोगरे : (लाइन पर) साहब, मैं मोगरे। रावसाहब आए हैं मिलने के लिये।

मुरार : (कड़वे स्वर में) भेज दीजिये। (रिसीवर रख कर) आ ही गया आखिर।

भंजुसा : कौन ? रावसाहब ना ? आ ही गई आखिर बला।

(टी० टी० बड़े मजे में यह प्रतिक्रिया देख रहे हैं। रावसाहब चाँदी की मूँठ वाली छड़ी और दरबारियों के स्टाइस में मुरारराव और मंजुसाबाई को झुककर सलाम करते हैं। उनके पीछे काला चश्मा लगाये हुए एक व्यक्ति आता है। कोने में बैठ जाता है।)

रावसाहब : रामराम मुरारराव साहब, रामराम माँजी।

मुरार : बैठिए।

रावसाहब : (बैठकर) क्यों टी०टी०, विरोधी दल के लोग फोरम हाजिर, आ ? (खुद ही हँसते हैं) बहुत अच्छे, बहुत अच्छे। स्वस्थ लोकतंत्र के लिये यह जरूरी भी है।

मुरार : अरे भई उन्हें पेड़े दो। (जैसे ही नौकर ट्रे लेकर पास आने लगता है, वैसे ही उसे रावसाहब की तरफ भेजते हैं।) लीजिये, रावसाहब। मुँह मीठा कीजिए।

रावसाहब : जरूर-जरूर, क्यों नहीं। पर हमारा मुँह तो बिना मिठाई के ही मीठा हो चुका है मुरारराव ! काबिल आदमी उचित जगह पर आ जाये तो अच्छा लगता है। किसी शायर ने भी कहा है। (एक दोर कहता है।) अगर गुणों का आदर होता हो अपना व्यक्तिगत विरोध आड़े लाने वाले कम से कम हम तो नहीं है। वैसे हमारी इनकी (यह टी० टी० को उद्देश्य करके) लाख स्पर्धा हो, (बाहे ठोक कर) लड़ना हो तो बड़े जोर-शोर से लड़ेंगे भी, पर ऐसे जैसे कुस्ती हो। कुस्ती सतम, स्पर्धा भी सतम, उसी समय प्रतिस्पर्धी से हाथ मिलानेवालों में से हम हैं। आदमी में स्पोर्ट्समैनशिप तो होनी ही चाहिये। वैसे राजनीति भी क्या है, कुस्ती का खेल ही तो है। (टी० टी० तालियाँ बजाते हैं। रावसाहब दामराना तरीके से उसे कुबूल करते हैं।)

टी०टी० : भाषण तो तालियों के लिए था राव साहब ! पर क्या यह सब नहीं है कि फेरीवाने का हस्का बग्या करने वाला एक मामूली

आदमी, आज जब एक सूबे का मुख्यमंत्री बन गया है, आपको दिल से मंजूर है ?

रावसाहब : आपको तो ऐसा ही लगेगा । अगर हम कहें कि इन्सान के दो पैर होते हैं, तब भी तो आप विरोध ही करेंगे । तब आप कहेंगे कि इन्सान के चार पैर होते हैं । दो पैर हमने किसी अपने मतलब से छिपा लिये हैं, यह आरोप सत्तारूढ़ दल पर थोप कर, किसी न्यायाधीन पूछ-ताछ, नहीं तो माफी की माँग, या फिर सभा त्याग की माँग आप उठूर करेंगे ।

टी०टी० : इन्सान का एक पेट होता है, और उसे भरने की जिम्मेदारी शासन पर है । इतना आप मान गए, तो भी बहुत है रावसाहब, पैरो की बात रहने दीजिए ।

रावसाहब : (पेट पर हाथ फिराकर) इन्सान का पेट ! यही तो आप बायें पक्ष वालों का मूल सिद्धान्त है । ठीक है, इसी से तो आपके भी पेट भरते हैं—

टी०टी० : हमारे पेट बहुत छोटे हैं, रावसाहब ! पेट तो सत्ताधीशों के होते हैं ।

मुरार : (जम्हाई रोकते हुए) जाने दीजिए टी० टी०, आप भी रहने दीजिये रावसाहब, कल से तो बहस करनी ही है ।

रावसाहब : बहम कौसी ? थोड़ा हँसी-मजाक है, बस और क्या ? जिन्दगी का मतलब है मजा । चार दिन का मेला है, दुनिया से लेकर भी क्या जाना है आखिर ? शायर ने कहा है, (शेर सुनाते हैं) क्यों माँ जी ?

मजुला : चाय लीजिये ।

रावसाहब : नहीं, अब चाय का मजा नहीं आयेगा । पेड़ों से मुँह भीठा हो गया है । फिर सही । चलूँ मैं ? (उठते हैं, एकदम गम्भीर हो जाते हैं ।) कुछ कहना चाहता था शाम की भीटिंग से पहले, लेकिन अब बाद में कहूँगा । (टी० टी० की तरफ एक नजर

डालते हैं।)

टी० टी० : (इसारा समझकर उठते हुए) मैं चलता हूँ—

मुरार : नहीं नहीं... (रावसाहब से) आइये, हम जरा उधर बात कर लेते हैं। आइये... (रावसाहब को ले कर अन्दर जाते हैं।)

रावसाहब : (अन्दर जाते-जाते टी० टी० को) माफ करना... बेअदबी करने का कतई इरादा नहीं था मेरा... (दोनों अन्दर जा चुके हैं।)

मंजुला : बड़ा पाप है मरा ! कौन-सी नई मुसीबत खड़ी करेगा, भगवान जाने !

टी० टी० : चाहे शायद ने ना कहा हो, लेकिन ये तो मुसीबतें बढ़ाने वालों में से ही हैं, मंजुलादेवी ! मुरारराव की चैन नहीं लेने देंगे यह आस्तीन के 'शेर' !

मंजुला : कई बार तो लगता है, क्यों इस फंदे में फँस गये ? इतने बुरे-  
.. बुरे लोगों से पाला पड़ता है, अब किसको क्या कहो। वो  
, देसाई है ना ! सीधे भाभी-भाभी करते रसोईघर में ही घुस आया... कहने लगा इस बँगले में आपके आने से पहले भी मैं  
, खाता रहा हूँ। बेशरम कही का !

टी० टी० : यही तो लोकप्रिय बनने के गुर हैं। राज्य चलाने वालों को यह सब सीखने ही पड़ते हैं। पति के साथ पत्नी को भी (धीमी आवाज में) लेकिन वहाँ जो बैठा है, वह कौन है ?

मंजुला : कौन ? (देखकर धीमी आवाज में) पता नहीं। रावसाहब के साथ आया था न ? उनको तो कोई न कोई ऐसा मुरीद चाहिए ही जो उनके शेरों की दाद दे—

टी० टी० : मतलब यह दाद है उनकी ?

मंजुला : और नहीं तो क्या ?

टी० टी० : और हम उसी के सामने रावसाहब के बारे में...

मंजुला : मैं तो और भी बोलूंगी। मैं किसी दल के हाइकमांड की

नौकर नहीं। मैं अपनी मर्जी की मालिक हूँ। मुझे किसी का डर नहीं !

टी० टी० : अब आप मुख्यमंत्री की पत्नी हैं, मंजुलादेवी ! आपको जरा सम्भलकर ही रहना चाहिए। आपका कहना मुरारराव को भारी पड़ सकता है। आपके किसी गलत कथन से सरकार तक उलट-पुलट सकती है...

मंजुला : (शर्माकर) हटिये। (मुरारराव आते हैं।)

मुरार : क्या हुआ ? ऐसा क्या कह दिया आपने टी० टी० ?

टी० टी० : वो कहाँ हैं ?

मुरार : कौन रावसाहब ? वो तो चले गये उधर से ही। (मंजुलाबाई से) माँजी को प्रणाम कहिए, ऐसा सन्देश है उनका।

मंजुला : माँजी ?

टी० टी० : बाह ! बेटा हो तो ऐसा गुण्डा—

मंजुला : मजाक छोड़िए ! (मुरारराव को हल्के स्वर से) उसे देखा क्या, वो—

मुरार : (देखते हुए) कौन है ?

मंजुला : रावसाहब के साथ आया था—

टी० टी० : उनके पीछे ही आया था—मैंने देखा था।

मुरार : रावसाहब अपना चमचा यहाँ भूल गये ? यह नहीं हो सकता...

मंजुला : फिर कौन है वो ?

(वो काले चश्मे वाला इन्सान कोने में चुपचाप बैठा है।)

मुरार : (टेलिफोन की तरफ जाते हुए) मोगरे से पूछना पड़ेगा—

मंजुला : मोगरे से किमलिए, सीधे उसी को पूछ लेती हूँ। (उस आदमी के पास जाकर, गला साफ करते हुए।) आप—(वह आदमी काले चश्मे के अन्दर से ऑब्जेक्ट माइण्डेडली देख रहा है।) मुख्यमंत्री से कोई काम था क्या ? (वह गर्दन हिलाकर मना

कर देता है।) फिर यहाँ किसलिए आये हैं? रावसाहब के साथ आये थे क्या?

आदमी : (उठते हुए) कौन रावसाहब?

मंजुला : अकेले आये थे क्या यहाँ?

आदमी : हाँ।

मंजुला : और कुछ काम भी नहीं है आपका?

आदमी : नहीं।

मंजुला : तो क्या आपने इस जगह को ऐरे-गैरो का वॉटिंग रूम समझ रखा है?

मुरार : (टी० टी० को) हैरानी है। कार्य के बगैर यह घुसा कैसे यहाँ? (जोर से) देखिये, पहले आप यहाँ से चलते बनिये। जायेंगे या बुलवाऊँ पुलिस को? जाइये, चलते बनिये...

टी० टी० : रुकिए मुरारराव, उसे जरा शिक्षा देना जरूरी है। (थोड़ा आगे होकर उस आदमी से) यहाँ कौन रहता है, पता है? मुख्यमन्त्री! मुख्यमन्त्री कौन होता है मालूम है? पूरे राज्य का मुखिया। मुखिया को बहुत काम होते हैं।

आदमी : (बोर होकर अपना हाथ थोड़ा झटक कर 'पता है' ऐसा संकेत करता है।)

टी० टी० : तो फिर भले आदमी, बेकार बिन बुलाये यहाँ आकर क्यों बैठे हो?

आदमी : बोर हो गया हूँ बहुत।

टी० टी० : क्यों बोर क्यों हो गये?

आदमी : अपन फिर नहीं आयेंगे।

मंजुला : किसी ने यहाँ आने के लिए बुलावा भेजा था क्या?

आदमी : हाँ।

टी० टी० : हाँ? मुख्यमन्त्री ने तुम्हें बुलावा भिजवाया था? (मुरारराव से) पेंच थोड़े ढीले लगते हैं। जाओ भाई, अपना रास्ता नापो।



(वह आदमी नाक के नीचे सरका हुआ चरमा ठीक करते हुए जाने लगता है।)

मुरार : (कुछ शंका होती है।) ठहरो; नाम क्या है तुम्हारा ? सच-सच बताओ—

आदमी : किसका ? मेरा ? सिदकर । भाई सिदकर कहते हैं अपन को ।

मुरार } : (एक साथ) भाई सिदकर ?  
मंजुला }

आदमी : क्या हुआ ? अपना नाम है यह ।

मुरार : जरा रुको । (टी० टी० देख रहे हैं। दो कदम आगे होकर) मुख्यमन्त्री ने किसलिए बुलाया था आपको यहाँ ?

आदमी : मुझे क्या पता—उसे ही पता होगा । काम घर था, तो बहुत से लोग किसी इश्तहार की चर्चा कर रहे थे । उस इश्तहार में मेरा नाम था शायद । मैंने भी कभी किमी को अपनी एक किडनी दी थी । जिसे किडनी दी थी, उससे मिलूँ ऐसा मुझे कहा गया । वो आजकल कहाँ रहता है, यह पता करने के लिए हस्पताल में फोन किया । हस्पतालवालों ने यहाँ का पता दे दिया । (मंजुलाबाई और मुरारराव एकटक देख रहे हैं।) चलते हैं अपन ।

मुरार : (अनिश्चित मन स्थिति में) किडनी देने का कोई सबूत ?

आदमी : सबूत ? (पास जा कर, ड्रमेंटिकली शर्ट पैंट से निकालकर पेट की निशानी दिखाता है । मुरारराव ऐसे हो जाते हैं, जैसे किसी ने तेज धार वाला चाकू दिखा दिया हो।) आप क्या समझते हैं, झूठ बोल रहे हैं हम ? (शर्ट पैंट में घुसाकर दर-वाजे की ओर जाता है । जाते-जाते) वह जरूर कोई पाजी होगा । साला बगैर काम के इश्तहार देकर झुलवाता है । मेरी आधे दिन की कमाई चोपट ;

मुरार : क्या काम करते हो ?

आदमी : वर्कसाप मे मेकैनिक हूँ ।

मुरार : (धीरे से मंजुलाबाई को) वही होगा क्या यह? तुके कुछ याद है?

मंजुला : तब का चेहरा—कुछ बता नहीं सकती । यह काला चस्मा—  
(वह आदमी बाहर जा चुका है ।) छोः, मुंह से शराब की बदबू भी आ रही थी ।

मुरार : (जल्दी से टेलीफोन उठाकर) मोगरे—अभी-अभी जो आदमी  
यहाँ से गया, उसे जाने मत दीजिये । रोके रहिये उसे ।  
(मंजुलाबाई को) जरा अच्छी तरह से याद कर लें...मैंने तो  
उसे देखा भी नहीं था । सिर्फ समाचार पत्र मे फोटो, और वह  
भी बेहोशी मे...ऑपरेशन के बाद...बस इतना ही देखा  
था...पर तूने तो देखा था उसे...ऑपरेशन के बाद ।

मंजुला : वह चेहरा अलग था । पर...ऐसा ही कुछ था वह भी । कुछ  
नहीं कह सकती...बहुत ही मामूली था चेहरा...और उस  
वक्त वह बेहोश भी तो था । कपड़े भी हस्पताल के थे । (फोन  
बजता है । मुरारराव फोन उठाते है ।)

मोगरे : (लाइन पर) उसे रोक रखा है साहब । पर वह रुकने के लिए  
तैयार नहीं है । जाने की कह रहा है ।

मुरार : पांच मिनट और रोके रहिये । किडनी निकालने की निशानी  
तो है उसके पेट पर । फिर नाम भी वही बता रहा है ।

मोगरे : (लाइन पर यह सब सुनकर) साहब...!

मुरार : नहीं, आपसे नहीं । (रिसीवर रख देते हैं ।)

मंजुला : पर मुंह से शराब की बदबू...

टी०टी० : आपको किडनी देने वाला आदमी यही है या नहीं. सवाल यही  
है न मुरारराव ?

मुरार : हाँ । कही कोई और ही बहाना बनाकर अपना काम न साध  
ले । तब तो विरोधियों को चर्चा के लिए अच्छा खासा मजमून

मिल जायेगा।

टी०टी० : पर वह तो आपका एक हिस्सा है ! आपको जीवन देने कात्ता ! आपकी धड़कन, आपकी दृष्टि, आपकी दुनिया, आपका अस्तित्व उसी से है, मुबह मंजुलादेवी से भी यही कह रहे थे न आप ? और अब जब वह सामने आया है, आप उसे पहचान भी नहीं सकते ? आप भी कमाल करते हैं मुरारराव ? आपकी भात्मा कुछ नहीं कहती ? या सत्ता पाकर वह भी क्षो गई कहीं ?

(निल्लंज हेंसी हेंसते हैं।)

मुरार : मज्जाक छोडो टी० टी०। ऐसे मामलों में अपना शक दूर कर सेना हमेशा अच्छा रहता है। राजनीति में कौन कब कैसे खेल दिखा जाय, क्या पता ?

(फिर फोन बजता है। मुरारराव रिसीवर उठाते हैं।)

मोगरे : (लाइन पर) साहब...

मुरार : रुकिये जरा...

(रिसीवर नीचे रखकर बेचैनी से चक्कर लगाते हैं।)

मंजुला : इतना याद है, तब वह मेकैनिक नहीं था।

टी०टी० : लेकिन बाद में तो बन सकता है ? इतने समय में जब कोई चीफ-मिनिस्टर बन सकता है, तो क्या कोई और मेकैनिक नहीं बन सकता ?

मुरार : क्या कहूँ...कैसे तसल्ली करवाऊँ ?

टी०टी० : उसे इसी वक्त लॉक-अप में बन्द करवाकर पुलिस-इन्क्वायरी के आर्डर दे...

मुरार : (जरा गुस्से में) टी० टी०...

(फोन फिर बजता है। बन्द हो जाता है।)

टी०टी० : मेरा कहा मानेंगे मुरारराव ? वो जरूर वही होगा—आपको बीड़ी की तरह किडनी दे कर आपसे कुछ भी न लेकर सापत्ता

हो जाने वाला !

मंजुला : लेकिन उसका हुलिया—शराबियों जैसी उसकी हालत—  
टी०टी० : इसीलिए तो मुझे पक्का विश्वास है। अच्छे घर का कोई चरित्रवान इन्सान अपनी किडनी किसी को बिना कुछ लिए कभी देता क्या ? खुद की दो किडनियों में से एक किडनी देना, जब से दस रुपये निकालकर देने जैसा आसान तो नहीं है मंजुलादेवी ! ऐसा करना इन्सान की जिन्दगी और मौत का सवाल है। कोई कितनी ही कीमत क्यों न दें, कोई भी सम्य समझदार आदमी अपनी किडनी इस तरह देने को तैयार न होगा। मैं तो नहीं मानता। अपने आप बिना किसी कीमत के और ये भी न जानते हुए कि लेने वाला आदमी कौन है, अपनी किडनी पागल की तरह दे गया—इसका मतलब है वो आदमी कोई 'ऐसा वैसा' ही है। यह जो अभी गया है न, इसी की तरह होगा, मुरारराव !

मुरार : अच्छा !

टी०टी० : मुझे तो यह 'वही' लगता है। आप चाहे इसे बाहर निकाल दें, या घर में रख लें। विरोधियों की बात मानने का चलन ही कहाँ है आप लोगों का ? मैं चलता हूँ अब—चलता हूँ मंजुलादेवी—

मंजुला : बैठिये टी० टी०; खाना खाकर जाइये—

टी०टी० : सॉरी, खाने के लिए मना करना मेरे लिए वैसे मुश्किल ही होता है, लेकिन अभी जरा पार्टी की कार्यकारिणी की मीटिंग है। चुनावों में हमारी हार का पोस्ट-मार्टम जो किया जाना है। आप हर चुनाव जीतते हैं—और हम हर अपनी हार का पोस्ट-मार्टम करते रहते हैं—ऐसा तो अब जैसे लिखा ही जा चुका है। जाना होगा मुझे। फिर से एक बार ब्रैस्ट-विशेज। कल मिलेंगे ही असेम्बली में। सिर्फ कल ही हम आपके

स्वागतार्थं बेच बजायेंगे।

(जाते हैं। टेलीफोन बन्द)

मुरार : (बैठे हुए हैं। मंजुलाबाई से) तुम्हें क्या लगता है ?

मंजुला : मेरा क्या ? आपको क्या लगता है, वो ज्यादा जरूरी है।

मुरार : (चुपचाप उठते हैं। जाकर रिसीवर उठाते हैं।)

मोगरे : (लाइन पर) साहब, अब शान्त हो गया है वह। मंशे में लगता है।

मुरार : नशे में !

मोगरे : (लाइन पर) हाँ साहब ! मुझे लगता है, जब उसे यहाँ रोका था, तब उसने अपने मुँह में कुछ डाल लिया था। कोई गोली होगी शायद। बाद में वह एकदम चुप ही हो गया।

मंजुला : क्या कह रहा है मोगरे ? कैसा नशा है ?

मुरार : कोई खास बात नहीं। (फोन पर) मोगरे, उसे इधर भेज दीजिये।

मोगरे : (लाइन पर) साहब—(थोड़ी देर बाद) अच्छा साहब !  
(मुरारराव फोन रख देते हैं।)

मंजुला : कैसा नशा ? क्या कह रहा था मोगरे ?

मुरार : (बेचैनी से) कहा न, कुछ नहीं। (पुलिस का एक सिपाही उस आदमी को पकड़कर ले आता है। वह आदमी खुद को सम्भाल नहीं सकता। आँखों का काला चदमा अब नाक तक उतर आया है।)

मंजुला : (उद्वेग से) यह सब क्या है ?

सिपाही : पक्का अफीमची लगता है साला ! ... (जीभ काटकर मुरारराव को) भूल हो गई सरकार। (मुरारराव उस आदमी की तरफ एकटक देख रहे हैं। पास जाते हैं। उसे नशे की हालत में देखते रहते हैं। वह आदमी अपनी गर्दन भी सम्भाल नहीं पा रहा।)

मुरार : सिदकर...! (उससे कोई रिस्पॉन्स नहीं मिलता। उसका लट-कता हुआ सर ठोड़ी से पकड़ कर ऊपर करते हुए) सिदकर...!  
 (सिपाही बड़ी हीरत से यह सब देख रहा है। मुरारराव धीरे से उसका काला चरमा उतार कर उसकी जेब में रख देते हैं।  
 (भावुक स्वर से) सिदकर... (खुद को सम्भाल रहे हैं। सिद  
 ...कर...यह क्या सिदकर...अँ ?

मंजुला : ले जाने दीजिये उसे—

मुरार : नहीं। (सिपाही से) उसे गैस्ट-रूम में ले जा और ठीक तरह सुला दे।

सिपाही : सरकार...!

मुरार : मैं जो कहता हूँ वो कर। गैस्ट-रूम में ले जाकर ठीक से सुला दे इसे, और गाड़ी भेजकर डॉक्टर को बुलाने के लिये कह मोगरे से।

सिपाही : जी सरकार ! (उस आदमी को ले जाने लगता है।) पर गैस्ट-रूम में तो पंडित जी है। कल सुबह जाना है उन्होंने...

मुरार : (माद करते हुए) पंडितजी...!

मंजुला : अजी वही...याद नहीं...चुनाव में आपकी जीत के लिये हवन करवाने वाले...

मुरार : तो फिर हमारे बेंड-रूम में ले जा उसे...

मंजुला : अं...S...?

मुरार : (जल्दी से गुस्सा होते हुए) देख क्या रहा है गधे ? सुनाई नहीं देता ? (फिर अपने आपको सम्भाल कर) कोई एक रुक जाना उसके पास। देख उसकी जेबें ठोक से टटोलकर और गोलिएं हो तो निकाल लेना—(मंजुलाबाई बड़ी कठिनाई से चुप हैं। सिपाही उस आदमी को ले जाता है।)

मंजुला : हमारे बेंड-रूम में रखेंगे उसे, और वह भी इस हालत में...

मुरार : (खुद में खोये हुए से) हाँ। (धीरे-धीरे) इसी तरह की सब

व्यवस्था होनी चाहिये उसकी यहाँ भी ।

मंजुला : (चौंककर) क्या...?

मुरार : (धीरे-धीरे अपने ही झूठ में, भावुक स्वर से) यह मुख्यमंत्री का हुक्म है । (होश में आकर) समझती क्यों नहीं आप...

मंजुला : समझ गई । अब आप धाराम कीजिये । कितने थक गये हैं... फिर शाम को पार्टी की मीटिंग भी है, रात को राज्यपाल से मेट है...

मुरार : (शान्ति से) आज मैं कुछ नहीं करने वाला ।

मंजुला : क्या कहा ?

मुरार : मंजुला, मुख्यमंत्री बन जाने से ही क्या मैं एक हाड़मांस का इन्सान नहीं रहा ?

मंजुला : मतलब ?

मुरार : कम से कम आज तो मेरा ध्यान और किसी बात में नहीं लगेगा...

मंजुला : तब क्या करने की सोची है आपने ?

मुरार : उसके पास ही रहूँगा मैं—वह—मेरी जिन्दगी का हिस्सा—मुझे जीवन देने वाला—

मंजुला : (कुछ कहना चाहती है, लेकिन रुककर) अच्छा, ऐसा ही कीजिये । सुदाम भाईसाहब को रात खाने पर बुला रही हूँ मैं । पार्टी मीटिंग यही रखने के लिये कहे देती हूँ उन्हें ।

मुरार : (आग्रह से) नहीं—पार्टी-मीटिंग यहाँ नहीं होगी ।

मंजुला : आज पार्टी-मीटिंग में आपका होना जरूरी है । आप समझते क्यों नहीं ? मंत्रिमंडल की सूची मंजूर करवाना है न ? कल सुबह फिर सूची ले कर आप दिल्ली जाने वाले हैं...

मुरार : मंजुला, आज मैं पार्टी-मीटिंग में नहीं जाऊँगा ।

मंजुला : तब कैसे—सीधे ही सूची दिल्ली...

मुरार : दिल्ली कल दोपहर को जाऊँगा—सुबह पार्टी मीटिंग हो

जायेगी ।

मंजुसा : (निःश्वास छोड़कर) अच्छा, सुवाम भाईसाहब को यही कह-  
सवा भेजती हूँ । और किसे-किसे खाने पर बुलाना है ? सुबह  
कह रहे थे—

मुरार : किसी को भी नहीं ।

(मंजुसाबाई अन्दर चली जाती हैं । मुरारराव अकेले किसी  
और मूढ़ में । अचानक खुश हो उठते हैं । स्वतः गुनगुनाते  
लगते हैं । टेबिल के पास जाकर बैठ जाते हैं । रिसीवर उठा-  
कर)

मुरार : कौन मोगरे ?

मोगरे : (लाइन पर) जी साहब ! बंड-रूम में सुला दिया है उसे ।  
डॉक्टर को गाड़ी भी भेज दी है ।

मुरार : (हृषित स्वर में) कोई है ना उसके पास ?

मोगरे : जी हाँ ।

मुरार : जरा ध्यान रखिये—नहीं तो भाग जायेगा फिरसे—(रिसी-  
वर पिन पर रखकर, फिर उठाकर) मोगरे—।

मोगरे : जी साहब ?

मुरार : राज्यपाल से रात को अपॉइंटमेंट कंसिल कर दीजिये । (लाइन  
पर मोगरे चुप) सुन रहे हैं ना ? शाम की पार्टी-मीटिंग में मैं  
उपस्थित नहीं हो सकता । उन लोगों से भी कहलवा भेजिये ।

मोगरे : पर साहब—गलतफहमी होने की सम्भावना—

मुरार : (ऊँचे स्वर से) तो आप चले जाइये गलतफहमी दूर करने ।  
आज के सभी कार्यक्रम कंसिल । कल सुबह की बजाय हम दोप-  
हर को दिल्ली जायेंगे ।

(रिसीवर रख देते हैं । अपनी अबकन उतार कर सोफे पर  
फेंक देते हैं । फिर कुछ माद आने पर रिसीवर उठाते हैं ।)

मोगरे—।



मोगरे : (लाइन पर) जी साहब !

मुरार : जरा आई० जी० पी० बसाले को दीजिये ।

(रिसीवर रख देते हैं । थोड़ी देर बाद फोन बजता है । रिसीवर उठाते हैं ।)

मोगरे : (लाइन पर) साहब, भाय० जी० पी० साहब बोल रहे हैं ।

मुरार : (शर्ट को आस्तीन को ऊपर करते हुए रिसीवर पर) कौन ? बसाले ? मिल गया हमारा आदमी ? "अभी तक नहीं मिला ? यही उम्मीद थी मुझे ।" "तलाश जारी है ? पूरी दुनिया छान मारिये बसाले ! आपको नहीं मिलने वाला बह ! मिल ही नहीं सकता ! मैं जो कह रहा हूँ । दुनिया के पाँचवे नम्बर पर है ना आपका गुप्त पुलिस विभाग ! शर्त लगाते हैं, शर्त ! हो ही नहीं सकता, क्योंकि वह आपको नहीं मिलनेवाला । ढूँढ़ते रहिये, बस ढूँढ़ते ही रहिये । नहीं नहीं, यहाँ आने की जरूरत नहीं । बिल्कुल मत आइये । अच्छा ।

(रिसीवर रख देते हैं । किसी मूड में उँगुलियों से टेबल बजाते हैं । फिर उठकर अन्दर चले जाते हैं । क्रमशः अन्धेरा । अब सफेद परदे पर प्रकाश होता है । टेलिविजन पर अनाउन्सर अनाउन्समेंट करती है : "अब राज्य के नये मुख्यमंत्री नागरिकों के नाम एक सदेश देंगे । यह संदेश हमने अपने स्टूडियो में पहले से ही टेलिविजन केन्द्र के लिये विशेष रूप से रिकार्ड किया था ।" फिर मुख्यमंत्री मुरारराय का आपण मुनाई पडता है, और वे दिखाई देते हैं ।) दोस्तो, इस राज्य का मुख्यमंत्री पद मुझ जैसे सामान्य सेवक के हाथ में सौंपकर मेरी पाटी, और हम सबके प्रिय प्रधानमंत्री ने बहुत बड़ी जिम्मेदारी मुझ पर डाली है, ऐसा मैं समझता हूँ । इस राज्य की महान परम्परा तथा मुझसे पहले यहाँ के मुख्यमंत्री का लोकहित में व्यतीत कार्य-काल, और उनकी कार्यकुशलता, तथा राज्य के सम्मुख

आज के अनेक विकट प्रश्न, इस सारी स्थिति का पूरा जायजा लेते हुये, मुझे जैसे सामान्य कार्यकर्ता की मुख्यमंत्री पद पर नियुक्ति, सम्मान से कहीं अधिक एक चेतावनी है, ऐसा भी मैं समझता हूँ ।

आज हमारा देश एक कठिन दौर से गुजर रहा है । अनेक बाहरी और अन्दरूनी समस्याएँ मुँह फाड़े खड़ी हैं । पिछले कुछ समय से प्राकृतिक संकटों ने भी विकास की घुड़-दौड़ में बहुत रोड़े अटकाये हैं । और हमने अपने रास्तों को बड़ी मजबूती से अपनी कमर कसके साफ किया है । हमें गर्व है कि हमारा सूबा इस मामले में हमेशा से ही आगे रहा है । सूखा पड़ा, बाढ़ें आईं, देश के इतिहास में चीजों की अभूतपूर्व कमी और कमरतोड़ मँहगाई हमने देखी, लेकिन हम डगमगाए नहीं । देश जीवित तो राज्य जीवित ! इस मुद्दे को ध्यान में रखकर ही हमने इतनी तकलीफें सही और अपने प्रिय प्रधान-मंत्री को अपना सहयोग दिया । इस राज्य की जनता का यह सद्भाव बड़े गर्व का विषय है । आज भी राज्य के सामने अनेक गम्भीर समस्याएँ हैं । उत्पादन में अपेक्षित बढ़ोत्तरी नहीं है । इसीलिये चीजों की कमी और बेकारी की स्थिति बनी हुई है । मँहगाई भी है, जनसंख्या में वृद्धि को जितना हम चाहते थे उतना रोकने में हम असफल रहे हैं, लेकिन यह भी मानना पड़ेगा कि साक्षरता के क्षेत्र में इस राज्य द्वारा की गई प्रगति बड़े गर्व का विषय है । बन्द या हड़ताल जैसे तरीकों से उत्पादन में कमी आती है, और अन्ततः राज्य के हालात पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । मुझे खेद से कहना पड़ रहा है कि इस तथ्य की जितनी जानकारी लोगों को होनी चाहिए, उतनी नहीं है ।

लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं है । इस राज्य के

नागरिक विचारवान और काफी प्रबुद्ध हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयत्नों से हमारा सूबा विकास के नये-नये आयामों को छूता जायेगा।

मुझे आशा ही नहीं, विश्वास है कि आप सब की शुभ-कामनाएँ मुझे सदैव प्रेरणा देती रहेंगी। राज्य के सूखा-पीड़ित भागों और पिछड़ी हुई जमातों की अधिक-से-अधिक सहायता करने का मैं आप सबको आश्वासन देता हूँ। मैं वचन देता हूँ, कि रोजगार में बढ़ोतरी, मँहगाई की रोकथाम, जीवन की सभी आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि, नि:शुल्क शिक्षा, इन सब के लिये मैं मनसा-वाचा-कर्मणा प्रयत्न करता रहूँगा। परिस्थिति विकट जरूर है, तब भी आप सब के सहयोग से उस पर विजय पा ली जायेगी। और प्रत्येक को उसका बाँछित हिस्सा मिल जाय, ऐसी मेरी भरपूर कोशिश रहेगी। जय हिन्द ! जय स्वराज्य !

(फिर से उजाला।)

मुरारराव, मंजुलाबाई, सुदाम पाटिल, टेलिविजन देख रहे हैं। मंजुलाबाई टेलिविजन का स्विच ऑफ कर देती हैं।)

सुदाम : गुड परफॉर्मेंस। रिअली गुड। आप को कैसा लगा भाभी ?

मंजुला : ठीक ही था, लेकिन...

सुदाम : लेकिन क्या ?

मंजुला : कुछ नहीं, सुदाम भाईसाहब ! आजकल ये कुछ ज्यादा ही मँच्योर दिखाई देने की कोशिश करते हैं।

सुदाम : क्यों ?

मंजुला : अब देखिये ना; जब से मन्निमंडल में आये हैं, तब से मैं कह रही हूँ, बालों को ढाँप दिया करें। लेकिन मजात है जो ये मेरी बात सुनें। उस बस्त्र तो बीच-बीच के कुछ पोंड़े से ही बाल पके हुए थे, तब से अगर धुक् कर देते तो...

सुराम : यह तो सच है, हाँ साहब...आज आप काफी जवान दिखाई देते । पर भाभी, क्या आप ऐसा नहीं सोचती कि राजनीति में कालों की अपेक्षा सफेद बालों की ज्यादा अहमियत है ? जब से मैं राजनीति में आया हूँ, तब से बड़ों के मुँह से यही सुनता आया हूँ...“ ज्यादा मत बताइये, हम सब समझते हैं । राजनीति में ही बाल सफेद हुए हैं...” इतना कह दिया कि कोई बस्स आर्म्युमेंट नहीं । नौजवानों के लिये अपने-अपने घर जाने का यही संकेत काफी होता था । हाल ही की पार्टी मीटिंग में भी यही भाषा चलती रही । एक ने तो टोपी उठाकर अपने थोड़े से सफेद बाल भी दिखा दिये ।

भंजुला : सफेद बालों का होना जरूरी नहीं है, भाईसाहब ! रावसाहब के बाल कहाँ सफेद हैं ? रोज बिला-नागा डाय करता होगा मरा !

सुराम : हाँ ! क्योंकि रावसाहब का दायरा सिर्फ राजनीति नहीं है भाभी ! वे सिनेमा और नौटंकी की दुनिया में भी बराबर घहल-कदमी करते हैं ।

भंजुला : हाँ-हाँ, पता है, औरतों की तलाश में फिरते हैं, यही ना ?

सुराम : मैंने तो सुना नहीं बाबा ! अपने तो कानों पे हाथ ! लेकिन अपने साहब तो ऐसे नहीं हैं ? उन्हें सफेद से काले रंग कर क्या करना है ?

भंजुला : सभी बातें क्या सोगों की खातिर ही करनी होती हैं ? अपनी पत्नी की खातिर भी तो कुछ करना चाहिये ।

सुराम : पर भाभी—पत्नी को तो पता ही होता है—अपने पति का...। सौरी, पति के बालों के असली रंग का ।

भंजुला : तब भी हर पत्नी चाहती है कि उसका पति सोगों को जवान दिखाई दे । इस पर भी कुछ कहना है आपको ?

सुराम : अरे उसकी क्या सुनता है...भाषण के बारे में कुछ बता । दस

की तरफ से कोई आक्षेप तो नहीं आ सकता ? दल से बाहर की मुझे जरा भी चिन्ता नहीं । शत्रु की अपेक्षा घर के भेदियों का ज्यादा डर है हमे ।

सुदाम : मुझे नहीं लगता इस भाषण के बारे में कोई कुछ कहेगा । झमेलों वाले सभी मुझे जानबूझ कर टाल दिये गये थे ।

मुरार : यह अपना मत बता रहा है तू ?

सुदाम : नहीं नहीं । सिर्फ बयान कर रहा हूँ । वैसे भाषण बहुत अच्छा था । और आज के भाषण की अपेक्षा सभी का ध्यान कल घोषित होने वाले नये मंत्रिमंडल की ओर होगा...पार्टी-मीटिंग में भी सिर्फ यही चर्चा का विषय था । लेकिन जब आपने मीटिंग में आने से मना कर दिया, तो हजार तरह के दाक लोगो का दिमाग कुतरते रहे ।

मुरार : और तेरा ? तेरा ध्यान नये मंत्रिमंडल की घोषणा की तरफ है या नहीं ?

सुदाम : झूठ क्यों बोलूँ ? है । मंत्री नहीं बना तो एक रात में ही कीमत घट जायेगी मेरी अपनी कॉन्सटीचुएन्सी में । सारे किये-कराये पर पानी फिर जायेगा । पहले अगर मंत्री ना बना होता तो बात और थी । पर एक बार बनकर ड्राप हो जाओ तो देखो अफवाहो की बाढ ! स्मगलिंग से सीधा सम्बन्ध जोड़ देंगे लोग । नहीं तो सोचेंगे, किमी सरकार विरोधी काम में हाथ होगा ।

मुरार : तुम्हे ड्राप ही कर रहा हूँ मैं ।

सुदाम : जैसे आपको मर्जी । ( चेहरा एकदम उतर जाता है । )

मुरार : अरे नहीं बाबा । तेरे बगैर कैसे चलेगा मेरा ? तेरे सर पर ही तो यह जिम्मेदारी ली है, सुदाम !

सुदाम : ( खुदा हो कर ) मंत्री ना भी बनायें, तो भी मैं आपका साथ देता रहूँगा ।

मुरार : खामखाह तेरी निष्ठा की परीक्षा क्यों लेता । ले लिया तुझे भी लिस्ट में ।

सुदाम : धन्य ! (खुशी से फूलकर) राज्यमंत्री की श्रेणी में या...

मुरार : फुलपलेंड मंत्री बना रहा हूँ तुझे । लगता है ऊपर से कोई खास विरोध नहीं होगा । इस बार तुम्हारे विभाग को पूरी ग्रहमियत दी जाय, ऐसी हवा तो थी दिल्ली में ।

सुदाम : सच बताऊँ ? मैंने तो यह सोच ही लिया था कि जब मुझे खाने पर बुलाया गया है, तो नये मन्त्रिमंडल में भी मुझे शामिल कर ही लिया होगा । अब इतनी बड़ी जिम्मेदारी मैं निभा सकूँ, इसकी शक्ति भगवान मुझे दे ।

मुरार : अपनी कॉन्स्टीचुएन्सी में देने वाला भाषण यहाँ मत झाड़ ।  
(सिपाही आता है ।)

सिपाही : वह उठ गया है सरकार ।

मुरार : अच्छा ! उसे यहाँ ले आ ।

सिपाही : जी..... (जाता है ।)

मुरार : तू उसे देखना चाहता था ना सुदाम ? अब उठ गया है वो ।  
यही आ रहा है ।

मंजुसा : इनका नया अर्धांग !

मुरार : (जरा इरीटेड हो कर) मंजुसा !

मंजुसा : इसमें झूठ क्या है ? डॉक्टर तक बुलाया...

सुदाम : डॉक्टर ? वो किसलिये ?

मुरार : होश में नहीं था वह । मोगरे कह रहा था कोई गोली-बोली खा ली थी उसने—इसीलिये सोचा पहले से सतर्क रहना ज्यादा ठीक होगा ।

मंजुसा : गोली अफीम की थी ।

मुरार : (जरा गुस्से से) तो क्या हुआ ?

(आगे सिदकर, पीछे से सिपाही आता है । सिदकर का चेहरा

एक्स्प्रेशनलेस ।)

सिपाही : ए ठहर ! खड़ा रह चुपचाप ।

(सिदकर चलता ही रहता है । आखिर एक कुर्सी उसके आगे लगाकर सिपाही बड़ी मुश्किल से उसे रोकता है ।)

मुरार : जा तू । (सिपाही जाता है ।) सिदकर..... (ब्लंक) अब कैसे हो सिदकर ?

(सिदकर कुर्सी के पीछे से रास्ता ढूँढ़कर आगे चलने का प्रयत्न करता है । जमीन पर कुछ ढूँढ़ रहा है ।)

मुरार : (प्यार भरा स्वर) क्या हुआ ? कुछ चाहिये क्या ?

सिदकर : (ढूँढ़ते हुए) चप्पलें...मेरी चप्पलें...

मुरार : चप्पलें...वो तो बाहर होगी । नहीं ऊपर बँड-रूम में...

(सिदकर उनके बोलने की तरफ ध्यान न देते हुए, चप्पलें ढूँढ़ता हुआ आगे-आगे चलता जाता है । दीवार से टकरा जाता है । शायद इसका दर्द उसे महसूस नहीं होता ।)

मुरार : (दर्द से) अरे-अरे ! (सिदकर के पास जा कर उसका सर मलना चाहते हैं ।)

सिदकर : (इसका ध्यान भी उसे नहीं है ।) किसने ली ? मेरी..... चप्पले...

मञ्जुला : चप्पलें कौन लेगा ?

सिदकर : (एकदम ब्लंक चेहरे से) चप्पलें...मेरी...

मुरार : चप्पलें मिल जायेंगी बाद में सिदकर । अभी बँटो—बँटो ।

(उसे हल्के से पकड़कर बिठाते हैं ।) चुपचाप बँठ जा ।

सिदकर : (तुरन्त उठकर) लेकिन मुझे...चप्पलें...चाहिये थी... (चलना शुरू कर देता है । रास्ते में खड़े मुदाम को) यह ठीक नहीं है...चप्पलें छिपा दी हैं मेरी ।

मुदाम : किसने छिपाई ?

सिदकर : मुझे ही पूछ रहे हो । (चुपचाप चलता रहता है ।) दरवाजा

कहीं गया, दरवाजा...जाता हूँ...चप्पलों के बगैर...  
चप्पलें छिपा दो...दरवाजा भी छिपा दिया ?

मुरार : किसी ने कुछ नहीं छिपाया । पहले यहाँ बैठ सिदकर । (उसे  
बिठाने का प्रयत्न करते हैं ।) चुपचाप बैठ । हिलना नहीं ।

सिदकर : (उठते हुए) लेकिन क्यों ? बाहर जाना है...

मुरार : अब खाना खा कर ही जाना, जहाँ भी जाना है ।

सिदकर : चप्पलें ?...

मंजुला : उसे तो चप्पलों की ही रट लगी हुई है...ढूँढ़ दीजिये ना उसे  
एक बार—

मुरार : (मंजुलाबाई को इशारे से चुप कराते हुए) सिदकर हमारी  
यह इच्छा है...दिली इच्छा है...कि तू आज हमारे यहाँ खाना  
खाए ।

सिदकर : चप्पलें...

मुरार : चप्पलें मिल जायेंगी, नहीं तो नई से लेंगे...चप्पलों की क्या  
कमी है ? पर आज तो तू यहाँ है, खाना खाके जाना । आज  
के दिन की खुशी और भी बढ़ जायेगी । हमें अच्छा लगेगा ।  
(मंजुलाबाई से) जरा गरम कॉफी मे खाना—(वह जाती  
है । सिदकर ब्लैंक खड़ा है ।) रुकोगे न सिदकर ?

सिदकर : सा ५५ सा—

मुरार : क्या हुआ ?

(सिदकर अपना सिर जोर से पीट लेता है ।)

मुरार : कॉफी पी लो, कॉफी । जरा खुस्ती आ जायेगी । (मुदाम से)  
ड्रग के नशे में है अभी भी । (सिदकर उठकर चलने लगता है ।  
मुरार राव उसे रोकना चाहते हैं, वो किसी मूढ़ में बसता ही  
रहता है ।)

मुरार : (जबरदस्ती उसके साथ पिस्तुले हुये से) सिदकर, सिदकर,  
रुक...कहाँ जाता ?



सिद्धकर : काम पर—काम पर जा रहा हूँ...

(चलता रहता है।)

मुरार : (सिद्धकर का रोकने में नाकामयाब होकर) मुदाम... (मुदाम जाकर सिद्धकर को पकड़ता है।)

सिद्धकर : अरे छोड़िये मुझे—छोड़िये... (बेकाबू होना चाहता है। चेहरा ब्लैक)

मुरार : नहीं सिद्धकर, तू ऐस नहीं जा सकता... मुदाम पकड़ के रख उसे... पकड़... (बेल बजाते हैं। सिद्धकर रुका हुआ। जो सिपाही आता है उसे) कुछ नहीं जा... (सिपाही कन्धे भटक कर चला जाता है।)

मुदाम : साहब कितनी देर ऐसे पकड़े रखेंगे इसे ? जाने दीजिये जहाँ जाना चाहता है...

मुरार : नहीं, बिल्कुल नहीं ! (मुदाम चौंकर देखने लगता है।) अभी नहीं। काँकी आ रही हैं। तुम नहीं जानते मुदाम, इस हालत में कहाँ जायेगा यह ? रात का वक्त है... ऊपर से इस की यह हालत... किसी चीज की होश नहीं इसे... पेट में भी कुछ नहीं—और हम खाना खाएँ ?... (मुदाम मुरारराव की तरफ देखता रहता है। इस वक्त तक सिद्धकर पीठ किये हुये एक तरफ पेट के बटन खोलने का प्रयत्न कर रहा है।)

मुरार : क्या हुआ सिद्धकर ?

(जल्दी से घण्टी बजाते हैं। सिपाही दोबारा आता है।) जल्दी से बायरूम में ले जा इसे—जा... भाग...

सिपाही : (सिद्धकर से) चल बे—

मुरार : (एकदम गुस्से से) अगर वह खुद जा सकता तो तुम्हें बुलाने की क्या जरूरत थी गधे ? इतनी भी शक्ल नहीं तुम्हें ? मूर्ख कहीं का। ठीक से पकड़ कर ले जा। जल्दी कर—

(सिपाही जबरदस्ती सिद्धकर को पकड़ कर अन्दर ले जाता)

है।) सम्भालना इसे—कहीं जाने की कोशिश करेगा—गिर जायेगा—यही वापिस ले आना—लापरवाही मत करना—  
(सिद्धकर और सिपाही अन्दर जा चुके हैं।) (सुदाम को)  
ड्रग्स से बरबाद हुआ जा रहा है। स्वास्थ्य खराब हो चुका है। ठीक से खा-पी भी कहाँ सकता होगा। मुझे तो लगता है, यह जल्दी ही मर जायेगा—..

सुदाम : मुझे से पूछो तो साहब, इसे बचाने की कोशिश करना बेकार है—

मुरार : लेकिन मैं ऐसी कोशिश करूँगा सुदाम ! तुम्हें हैरत होगी। तू समझेगा मैं पागल तो नहीं हो गया, राज्य की जिम्मेदारी के साथ-साथ यह भी कर रहा हूँ। लेकिन ऐसा नहीं है। इसी इन्सान की वजह से मैं आज जिन्दा हूँ। इसने उस वक्त मुझे अपनी किडनी दी तभी आज मैं हूँ, और बदले में मुझ से कुछ माँगा भी नहीं। कुछ भी नहीं। सीधा चला गया। और आज मैं उसे ऐसे ही मरने दूँ ? मैं उसे यूँ ही छोड़ दूँ ? यह कैसे हो सकता है, सुदाम ! (भावुक स्वर से) इन्सानियत नाम की भी कोई चीज है या नहीं ? मैं अपने पेट में उसका एक जिन्दा हिस्सा लिये हुए हूँ... मैं और वह अब बँध चुके हैं... (मंजुला-बाई कॉफी ले कर आती हैं।)

मंजुला : कहाँ है...आपका वो ?

मुरार : अब तक आ जाना चाहिए था... (व्यग्रता से कॉल-बेल बजाते हैं। सिपाही आता है) कहाँ है रे वो ?..

सिपाही : (टालमटोल करते हुए) है...

मुरार : जल्दी ले आओ उसे यहाँ...

सिपाही : कपड़े बदल रहे हैं उसके...

मुरार : क्यों ?

सिपाही : (संदोष में) कपड़ों में...कर दी तसने...

सुबाम : क्या !

मंजुला : छो: ! कहां !

सिपाही : (मंजुलाबाई से) बाहर ही... कारपेट पर...

मंजुला : कारपेट पर !

मुरार : कमाल है ! (स्वर बदलकर) रहने दो । वैसे भी हम यह पलट छोड़ ही रहे हैं... उधर नई कारपेट्स होगी...

मंजुला : तो क्या हुआ ? (सिपाही से) और तुम लोग सब क्या कर रहे थे ?

सिपाही : हम—हम क्या करेंगे... उसे कोई सुध-बुध ही नहीं थी...

मंजुला : उसे भले ना हो... पर तुम्हें प्रो होश या या नहीं ?

सुबाम : आप परेशान मत होइये, मैं जाकर देखता हूँ क्या बात है—

मुरार : तुम रुको । (खुद अन्दर चले जाते हैं । मंजुलाबाई गुस्से में ।)

सुबाम : अजीब है !

मंजुला : अब आप ही बताइये, कैसे क्या करें ?

सुबाम : हमारे साहब तो एकदम हिसाबी-किताबी इन्सान... भावना से कोसों दूर... पिछले साल जब मंत्री थे, तो कितना बड़ा करप्शन का आरोप लगा था, 'त्यागपत्र दीजिये' का कितना शोर विरोधियों ने मचाया था । साहब जब खाद्यमंत्री थे तो सूखे की बात लेकर विरोधियों ने प्रदर्शन और धेराओं का हंगामा खड़ा कर दिया था । कोई पतली खालवाला होता तो कभी का कुर्सी छोड़कर भाग लेता, लेकिन साहब तो हिमालय की तरह अडिग रहे । हिले तक नहीं । इतनी ताकत थी तभी तो साहब आज तक टिके रहे... और आज वही इस तरह !

मंजुला : मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा । मुख्यमंत्री बनने की खुशी मनाने चली थी, तो यह बखेड़ा खड़ा हो गया ।

सुबाम : नहीं । यह उनके स्वभाव में नहीं है, भाभी !

मंजुला : पर जो कुछ हुआ है, वह तो सच है, तब क्या ?

४३  
(मुरारराव सिदकर को मकड़ें हुए धीरे-धीरे आते हैं। सिदकर ने एक बड़ी पेंट, टाई से बांधकर पहनी हुई है। चेहरा लुके।)

मुरार : आ। बैठ यहाँ। (उसे बिठाते हैं। प्यास से पपुषपाते हैं।  
बैठ। ले, कॉफी पी ले। (मज्जुलावाई सिदकर के हाथ में कॉफी का कप देने लगती हैं।) इधर ला। उससे पकड़ा नहीं जायेगा।  
(खुद सिदकर को कॉफी प्लेट में उँडेलकर देने लगते हैं।)

सुदाम : मैं पिला देता हूँ साहब...

मुरार : नहीं। तुझसे नहीं होगा। (सिदकर को कॉफी पिला रहे हैं।)  
बच्चा है एकदम। कुछ नहीं कर सकता और जाने लगा था...  
कैसे जाता बेटे ? रास्ते पर भीड़ कितनी...ले, कॉफी ले...

सिदकर : (कॉफी पीने से जरा चुस्त हो कर उठते हुए) बस्स। (चलने लगता है।)

मुरार : अरे ! फिर से कहाँ चला ? सिदकर... (रोकते है।)

सिदकर : कौन रोक रहा है मुझे ?

मुरार : नहीं सिदकर, ऐसे मत जाओ...

सिदकर : साला, उल्लू का पठ्ठा !

(सिदकर यह मुरारराव से कहता है, और मुरारराव शाँकड।)

सुदाम : (शर्ट की बाँहि ऊपर करते हुए ! ऐं किसे कह रहा है उल्लू का पठ्ठा ? राज्य के मुख्यमंत्री हैं वे...

सिदकर : उल्लू का पठ्ठा !

सुदाम : अदब से बात कर !

मुरार : जाने दे, सुदाम। होश में नहीं है वो।

सिदकर : कौन कहता है मैं होश में नहीं हूँ ? उँगलियाँ दिखाओ बराबर गिनता हूँ। बोलने का काम नहीं। दिखाओ उँगलियाँ, दिखाओ !

मुरार : हाँ हाँ। तू बिल्कुल होश में है, सिदकर...

सिदकर : हाँ S S S।

मुरार : इसीलिये तो कह रहा हूँ तू खाना-बाना ठीक से खा ले...

सिदकर : हट डऽ !

मुरार : हमारा तुम्हारा एक अलग ही रिश्ता है। है ना सिदकर ?

सिदकर : तुम्हारा होगा, अपन का नहीं।

मुरार : मैं जिन्दा हूँ, मुख्यमंत्री हूँ, उसका कारण मेरे पेट की स्वस्थ किडनी है...जो तूने दी है...तूने...बदले में कुछ भी नहीं माँगा जिसके...

सिदकर : सालो चप्पलें...

मुरार : सिदकर, आज तू यहाँ से खाली हाथ नहीं जायेगा।

(यह सुनकर सिदकर लड़ने के लिये तैय्यार हो जाता है।)

मतलब तू जा नहीं सकता...तेरा जाना ठीक नहीं होगा—

सिदकर : दरवाजा कहाँ गया ?

मुरार : मिल जायेगा बाद में।

सिदकर : नहीं। पहले मिलना चाहिये। और चप्पलें...बो भो...

सुदाम : (धीरे से) अब आप बोलिये नहीं साहब ! जब दरवाजा ही नहीं मिलेगा तो जायेगा कैसे...खाना तैय्यार होने तक यही घर में फिरता रहेगा...हाँ...

(सिदकर किसी चीज से टकराकर गिर पड़ता है।)

मुरार : (आगे हो कर) अरे अरे... (पास जाकर सम्भालते हैं।)

चोट तो नहीं आई सिदकर ? कहाँ लगी ?

सिदकर : (पेट की जेब टटोलते हुए) पैसे...पैसे गये...चप्पलें भी गईं...दरवाजा गया...साला...क्या मजाक है...मजाक ही है... (उठने का प्रयत्न करता है।) पैर भी...गये...

मुरार : (भावुक स्वर में) चिन्ता मत कर तू सिदकर, बेशक सब कुछ चला जाये, तो भी मैं हूँ...मैं हूँ तेरा...इस राज्य का मुख्य-मंत्री...तेरे पीछे...पर्वत की तरह खड़ा हूँ...

सिदकर : (देखता रहता है। इशारे से पास बुलाता है। मुरारराव के पास

आते ही आँख मारते हुये) डरो मत—मैं भी तुम्हारा हूँ...

मुरार : हो ना ?

(मुरारराव की तरफ देखकर सिदकर चुम्बन लेने का संकेत करता है।)

मंजुला : यह क्या ? कोई देख लेगा तो क्या कहेगा...

मुरार : कहने दो। अब मैं उसकी फिक्र नहीं करता मंजुला ! एक अलग ही माहौल में पहुँच गया हूँ मैं। सब्चे प्रेम के संसार में...

मंजुला : इसका और आपका प्रेम !

मुरार : हाँ, इसका और मेरा प्रेम ! दिव्य प्रेम ! एक खून का प्रेम मंजुला ! एक ब्लडग्रुप का प्रेम ! किडनी की शल्यक्रिया के एक कोमल तंतु से हम बँध गये हैं, हैं ना सिदकर ?

सिदकर : (हाँ में सिर हिलाता है) आय लव्ह यू ! (बेसुरा गुनगुनाने लगता है।)

मंजुला : कब तक चलेगा यह तमाशा ?

मुरार : सिदकर ! आखिर हम दोनों के मन एक हो गये, अच्छा हुआ। शरीर तो पहले से ही एक हो चुके थे।

सुवाम : (मंजुलाबाई से) ऐसा वैसा कुछ नहीं भाभी ! आप इसका सीधा-साधा अर्थ समझो...हाँ...

मुरार : सिदकर, सिदकर आज का दिन बहुत मूल्यवान है।

सिदकर : (इंग्लिश म्यूजिक गाने का प्रयत्न करता है।)

मुरार : गा, मेरे पंछी ...गा...मेरे प्राण गा...

मंजुला : (सुदाम से) अब मुझसे नहीं सुना जाता...

सुवाम : यह सब "वैसा" नहीं—सीधे अर्थों में...

मुरार : (सिदकर के गले में बाँहे डालकर) अब अपने दिव्य प्रेम से हम त्रैलोक्य प्रकाशित कर देंगे—अपने प्रेम के बूते ९२५ का ऐसा कल्याण कर डालता हूँ...विरोधियों की निकाल देता हूँ—घर के भेदियों की चमड़ी उधेड़ता

तू मिल गया...सच्चे मानों में दिल ने दिल की राह पा ली—  
(उसे हल्के-से धूकर) तेरी जात कौन-सी है सिंदकर ? जरूर  
ही वह नीची होगी—इसका मतलब हमारा यह शारीरिक  
सम्बन्ध समाजवाद कहलायेगा—हर जाति के लिए एक  
अच्छा उदाहरण रहेगा—क्रान्तिकारी कहलाएगा—

मंजुसा : (जल्दी से) भाई साहब, मैं जरा अन्दर खाने की तरफ देखती  
हूँ—(अन्दर चली जाती है।)

मुरार : क्यों सुदाम, तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा यह सब देखकर ?

सुबाम : आपको नहीं हो रहा ?

मुरार : युगों-युगों के बन्धन हैं यह—सिंदकर और मैं—दो शरीर—  
किडनी एक—नहीं। आत्मा एक। कितनी शान्ति महसूस हो  
रही है।

सुबाम : (धीरे-से) साहब, यह सब ठीक है, लेकिन बाहर किसी को  
पता चल गया तो बहुत बड़ा स्कैण्डल होगा...

मुरार : स्कैण्डल ? इसमें कौन-सा स्कैण्डल ? कैसा स्कैण्डल ? यह तो  
दुनिया का सबसे पवित्र रिश्ता है, सुदाम !

सुबाम : पर लोगों की समझ में भी तो आना चाहिये...

मुरार : इसमें ना समझने की क्या बात है ? सिंदकर और मैं...मैं  
और सिंदकर—

सुबाम : (गला साफ करते हुए) आखिर आप दोनों पुरुष हैं साहब।

मुरार : तो ? (एकदम ध्यान में आकर) सुदाम इतनी बुरी नजर ?  
छिः, छिः।

सुबाम : अपने बारे में नहीं, लोगों के बारे में बात कर रहा हूँ।

सिंदकर : क्या कोई गड़बड़ है ?

मुरार : कुछ नहीं भैया। अभी खाना आता है, हम दोनों खाएंगे।  
(सुदाम अनजाने ही कानों में उँगलियाँ डाल लेता है।) और

मजे से डकार लेंगे। ऐसा पाठ स्कूल में पढ़ा था हमने। स्कूल

की एक-एक याद ताजी हुई जा रही है। अमोघ पढ़ने की इच्छा थी, पर वही पढ़ाई खत्म हो गई।

सिद्धकर : (मुरारराव की तरफ निर्विकार रूप से देखते हुए) उल्लू का पट्टा ! (मुरारराव सैंटकॉन्दास हँसते हैं।) उल्लू का पट्टा ! उल्लू का पट्टा !

मुरार : (जरा अस्वस्थ होकर, दूर से देखते हुए नौकरों को) क्या है रे ? जल्दी-से खाना लाओ पहले—भागो—यहाँ क्यों खड़े हो—

(नौकर दौड़कर अन्दर चले जाते हैं।)

सिद्धकर : (मुरारराव की तरफ उसी तरह देखते हुए) उल्लू का पट्टा !

मुरार : (ध्यान ना देने का प्रयत्न करते हैं) खाना आता ही है सिद्धकर...

सिद्धकर : उल्लू का पट्टा !

मुरार : अरे सुदाम! तुम बैठो ना... खड़े क्यों हो ? आँ ? खड़े क्यों हो तुम ?

सिद्धकर : उल्लू का... पट्टा !

सुदाम : मैं जरा चलूँ साहब। खाने का क्या है, कभी बाद में खा लूँगा—कल, परसों कभी भी—मैं तो घर का ही हूँ—जरा थोड़ा पार्टी का काम था—अभी-अभी याद आया—मैं तो भूल ही चला था—

मुरार : क्यों ? रुक जाओ ना—

सिद्धकर : (ऊँची आवाज से) ए उल्लू के... पट्टे !

सुदाम : नहीं—अन्दर भाभी को बता दूँ—सुबह आऊँगा—सुबह—अब आज्ञा दीजिये—जाता हूँ—

(जल्दी से अन्दर चला जाता है।)

सिद्धकर : (मुरारराव की तरफ झेंकली एकटक देखता है। फिर हँसते हुए) उल्लू का पट्टा !



मुरार : (स्वर ददं से भरा हुआ) जय तुम ऐसा कहते हो भैया...और वो भी किसी के सामने—तो यूँ ही गलतफैमी हो जाती है। लोगों को क्या पता अपना रिश्ता ?

सिदकर : रो तू। रो। अच्छी तरह रो।

मुरार : तुमसे मैं आदर की अपेक्षा नहीं करता...अपना रिश्ता ही अलग है—मैं बुबूल करता हूँ कि मैंने कुछ पाप जरूर किए होंगे—आखिर राजनीति है—सेर को सवा सेर होकर दिखाना पड़ता है राजनीति में...यह सज्जनों का क्षेत्र नहीं है...पर जब और लोगों के सामने...कुछ भी हो, इस राज्य का मुख्यमन्त्री हूँ मैं—

सिदकर : और जोर से रो।

मुरार : सिर्फ इतना लिहाज करना, और हमें कुछ नहीं चाहिये...हम दोस्त...हम भाई...एक घाली में खाएँगे—

सिदकर : जोर से रो।

मुरार : नहीं... (भावना-भरे स्वर में) भैया...भैया... (रोने लगते तभी नौकर आ जाता है। एकदम सम्भलकर) क्या है रे ? क्या है ?

नौकर : (सकुचाकर) खाना...खाना लगा दिया है...

मुरार : आ रहे हैं, चल—चल भैया—

(अंधेरा। सफेद परदे पर प्रकाश।

टेलिविजन पर खबरें। खबरें पढ़ने वाला :

"नए मुख्यमन्त्री श्री मुरारराव का अभिनन्दन कंठों के लिए उनके निवास स्थान पर सुबह से ही उनके चाहने वालों की भीड़ लगी हुई थी—"

मुख्यमन्त्री को हार फूल आदि देने के दृश्य। उनका हँसता हुआ चेहरा।

भूतपूर्व मुख्यमन्त्री ने नए मुख्यमन्त्री के विषय में एक पत्र में

अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा है कि कामगर वर्ग से आने वाले इस मुख्यमन्त्री द्वारा सही मानों में इस राज्य का बहुमुखी विकास होगा, ऐसी आशा मैं व्यक्त करता हूँ। इसी प्रकार के उद्गार नए मुख्यमन्त्री ने भी भूतपूर्व मुख्यमन्त्री के लिए व्यक्त किए और कहा कि उनके द्वारा शुरू किए गए पुनीत कार्य हम पूरे करके छोड़ेंगे—”

सफेद परदे पर अँधेरा ।

अँधेरा ।

प्रकाश । घड़ी में पन्द्रह या तेरह घण्टे बजते हैं । मुरारराव और सिदकर अन्दर से बाहर आते हैं । मुरारराव सन्तुष्ट हैं । नाइट गाउन पहना हुआ है ।)

मुरार : (डकार सेते हुए; पानदान लेकर पालथी लगाकर बैठता है ।)

.. तू हमारे यहाँ आया, तूने हमारे साथ चार कौर खाना खाया, हमें इससे अपना आज का दिन कुछ सार्थक हुआ-सा लग रहा है । आज बहुत-बहुत खुश हूँ मैं ।

सिदकर : दरवाजा उधर है ना ?

मुरार : क्या हुआ ?

सिदकर : चलता हूँ ।

मुरार : कहाँ जा रहे हो ?

सिदकर : जाना चाहता हूँ यहाँ से ।

मुरार : अभी ?

सिदकर : हाँ । जाऊँगा ।

मुरार : पर...जरा रुक जाओ । पान खाकर जाना...।

सिदकर : नहीं (जेबें टटोलने लगता है) साला...

मुरार : क्या हुआ (कोई बात ध्यान में आते हुए) लेकिन मुझे तुझसे जो कहना था, वह अभी बाकी है । मतलब अभी तक तू...  
वैसे ठीक नहीं था ।

सिद्धकर : (चीकन्ना होकर फिर से जेबें बड़ी उत्सुकता से टटोलता है।)

मुरार : (यह सब देखते रहते हैं। फिर गला साफ करते हुए) तो मैय्या ! यह मौका देखते हुए एक-दो बातें कहना चाहता हूँ तुझसे, सुन रहा है ना तू ?

(सिद्धकर अब पागलों की तरह जेबें बार-बार उलट-पुलटकर देख रहा है। इस वक्त उसका ध्यान कहीं नहीं है। जेबें उलट-पुलट करने की गति और तेज हो जाती है।)

मुरार : मैया... (सिद्धकर का ध्यान नहीं है।)

मैय्या... (सिद्धकर का ध्यान नहीं है।)

तो मैय्या...

(अत्यधिक गति से सिद्धकर वही जेबें उलट-पुलट करने में लगा हुआ है।)

मुरार : (भावना से भरे हुए, और कुछ भयभीत होकर यह सब कुछ देख रहे हैं।) जो तुझे चाहिये वह उसमें नहीं मिलने वाला मैया। उसमें वह है ही नहीं। क्योंकि मैंने वह निकाल लिया है। जरा यहाँ बँठ और मेरी बात ध्यान से सुन। तेरी ही भलाई की बात हम करने जा रहे हैं।

(कोई असर नहीं है। सिद्धकर अद्भुत गति से अपने काम में लगा हुआ है। एवदम रुककर जेबें टटोलने के लिए निकाती हुई कमीज, वह गुरुमे से जमीन पर पड़बता है। मुरारराव की तरफ लड़ने के इरादे में देखता रहता है।)

सिद्धकर : (जोर-से दाँत भीचते हुए) उल्लू का पट्टा...

मुरार : (जरा धबकाकर) मैया... (धीरज करके सिद्धकर की तरफ पान बढ़ाते हुए) से पान से। (सिद्धकर लड़ाई के इरादे से मुरारराव की तरफ देखता रहता है।) मैय्या पान से।

(सिद्धकर एक तरफ पकता है, और उसी लड़ाई वाले पौन से

खड़ा है।) ले पान ले भैया...खुद अपने हाथों से मैंने बनाया है। (सिदकर पंर से मिट्टी कुरेदने जैसा कुछ करता है। क्रोधी मुद्रा में ही।) मैं...मैं डालूँ पान मुँह में ? कर, आ कर...कर आ...आ देखूँ...इधर कर मुँह...इधर...उधर नहीं इधर...

(सिदकर और मुरारराव, उसी जगह पकड़न-पकड़ाई जैसा करते हैं और सिदकर एकदम से टारजन की तरह चिल्लाकर दौड़ते हुए बाहर निकल जाता है।

मुरारराव अन्दर जाने वाला दरवाजा ठीक से बन्द करके टुथ-प्रिक से दाँत कुरेदते हुए चुप बैठे रहते है। सिदकर वापिस आकर चिढ़ा-सा खड़ा रहता है।)

आ गए भैया। आ बैठ। दरवाजा बन्द है ना ? सभी दरवाजे बन्द हैं ? तेरे सारे इरादे जानते हुए सारी व्यवस्था पहले ही कर दी थी मैंने। यूँ ही थोड़े मुख्यमन्त्री बन गया मैं ? सत्ता की गोली खाकर मस्त हुए पहले मुख्यमन्त्री से भी तेज निकला मैं, वो तो बैठ गया हाथ मलते हुए। अब तो बैठेगा ना भैया ? नहीं तो खड़ा रह चस।

(सिदकर जबरदस्ती बैठ जाता है।) मेरी बात सुनकर तू जरा विचार करने लायक रहे। इसीलिए तो मैंने तेरी जेबों से गोलियाँ निकलवा ली थी। (सिदकर उठना चाहता है।)

बैठ भैया। (जमीन पर पड़ी उसकी कमीज उठाकर उसकी तरफ फेंकते हुए) यह डाल ले। गोलियाँ चाहिए हो तो तुझे मेरा कहना सुनना पड़ेगा। (सिदकर बड़ा अनमना-सा होकर कमीज डालता है।) अब मैं बोलना शुरू करता हूँ।

(उठकर एक तरफ रखा हुआ पैड और बॉलपेन लाकर बैठ जाते हैं।) अगर कोई शंका हो तो एक हाथ ऊँचा उठाना। ऐसे। (हाथ ऊँचा करके दिखाते हैं।) जब मैं पूछूँ तभी अपनी

बात बताना । तो मैं, किसी एक संयोग से हम इकट्ठे हुए। शरीर मिले—मतलब ब्लड-ग्रुप, किडनी वर्गरा, तब मैं मुख्यमन्त्री नहीं था । मैं मुख्यमन्त्री बनूँगा ऐसा तो किसी ने सोचा भी नहीं था । खुद मैंने भी नहीं सोचा था, दूसरों की तो बात ही क्या ? जब मैं मरने लगा था, तब डॉक्टरों ने एक विशिष्ट ब्लड-ग्रुप का विज्ञापन देकर एक ट्रैप या एक किस्म का पिंजरा लगाया था और उस पिंजरे में तू अपने-आप लिचकर चला आया...बिना किसी के बुलाये...बिना कोई माँग किये...वैसे देखा जाय तो लालच के लिए भी उस वक्त उस पिंजरे में कुछ रखा नहीं गया था । एक किडनी खोकर तू चला गया । और फिर तेरे लिए जाने-अनजाने मेरे दिल में एक अजीब-सा अपनापन घर कर बैठा । इसीलिए दूसरा पिंजरा तेरे लिए बनाया गया । मुख्यमन्त्री बन जाने के बाद जिस नए विज्ञापन में तू फँसकर यहाँ चला आया । (यह सारी बातें चल रही हैं, लेकिन सिंदकर का ध्यान उधर नहीं है । सिंदकर बारी-बारी से एक हाथ बार-बार ऊँचा कर रहा है ।) कुछ कहना है ?

**सिंदकर :** गोलियाँ, गोलियाँ !

**मुरार :** बाद में । हाँ तो फिर अपने मुँह पर आते हैं हम । अब तू यहाँ से आसानी से नहीं जा सकता । इस वक्त मैं जो कुछ भी चाहूँ, कर सकता हूँ, मसलन तुझे दहशतवादी कहकर सरक्षण कानून के अधीन अभी इसी समय जेल, या गद्दार कहकर हमेशा के लिए देश-निकाला ! लेकिन अधिकार इस्तेमाल करने की भादत होते हुए भी मुझसे यह नहीं हो सकेगा, क्योंकि तेरे लिए मेरे दिल में कृतज्ञता की भावना है । यह अनुभव कुछ असल ही है । लेकिन राजनीति की कृतघ्नता-भरी जिन्दगी में यह चीज मुझे अच्छा लग रहा है ।

(सिदकर दोनों हाथ ऊँचे करके पागलों की तरह उन्हें हिला रहा है।) हाथ नीचे कर भैया, और आगे सुन। आज मैं तेरे लिए ऐसा कुछ करना चाहता हूँ, जिससे तुझे कुछ सन्तोष मिले। वैसे मैं बड़ा असन्तुष्ट आदमी हूँ। हाँ, तो मैं तेरे लिए क्या कर सकता हूँ ?

सिदकर : (हाथ नीचे करते हुए) गोलियाँ।

मुरार : या तो मैं एक ऐसी नौकरी तुझे दिलवा दूँ, जिसमें काम कम-से-कम हो, एअर कण्डिशनड कैबिन हो, मोटी तन-स्वाह हो, बार-बार विदेश जाने का चान्स हो। (सिदकर उँगलियों से 'गोली' का इशारा करता है। अलग-अलग तरीकों से।) तू हाँ कह दे, तो मित गई समझ। वैसे इस शहर की किसी आलीशान जगह पर कोई आलीशान प्लैट भी मैं तुझे दिलवा सकता हूँ। तू चाहें तो उसे चौगुने किराये पर चढ़ा सकता है या उसमें औरतों से धन्धा करवा सकता है। (सिदकर की ओर से अब भी कोई उत्तर नहीं) नहीं ? जो कुछ मैं कह रहा हूँ, वो तू ठीक से सुन भी रहा है या नहीं ? जिन्दगी में दुबारा तुझे यह सब कुछ सुनने को नहीं मिलेगा। अच्छा ये भी रहने दे, तू चाहें तो किसी अच्छे-से उद्योग का लायसेन्स और वो भी बिना अपना हिस्सा रखे मैं तुझे दिलवा सकता हूँ। पूरी सोने की खान, तुझ अकेले को ! (बैट करके) यह भी नहीं ? चलो छोड़ो, तो फिर... कॉन्ट्रैक्ट देने वाली किमी कमेटी का अध्यक्ष तुझे बनवा दूँ ? देख ले, कॉन्ट्रैक्ट देने के बदले में तो सभी श्रद्धि-सिद्धियाँ हाथ जोड़े सामने खड़ी रहती हैं। कार, शराब, शबाब, इम्पोर्टेंट टी० बी० सैंड, फ्रिज, एअरकण्डिशनर, फर्निचर प्लैट, इनमें से कुछ भी, या यह सब कुछ मिल सकता है। (घोड़ी देर रुककर) गोलियाँ खा-खा के तेरा तो दिमाग खराब हो गया है।

(सिदकर न बोलते हुए ओंठो के इशारे से 'गो' 'सी' यह शब्द बार-बार दोहरा रहा है। चेहरा टेढ़ा-मेढ़ा कर रहा है।) तू भी कमाल का है। अब एक और जबरदस्त ऑफर है, ठीक से सुन। राज्य के सहकारी बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर की पोस्ट ! एक पूरे का पूरा वैभवशाली साम्राज्य ! साथ में धमकों की लम्बी कतार, ऐसा ओहदा है यह कि वक्त आने पर मन्त्री तक झुक जाते हैं। कितनी बड़ी पोस्ट ! और जो पहले बतायी थी वही सब सुख-सुविधाएँ। सिदकर की तरफ मुरारराव की पीठ है, पीछे ताली की आवाज। मुरारराव मुडकर देखते हैं।) ये हुई ना बात ! अब समझा तू ! (सिदकर ने भच्छर मारा है।) नहीं इतने पर भी नहीं। तू आदमी है या हँवान ? कोई महात्मा-वहात्मा समझता है क्या खुद को ? और तो और महात्माओं के मुँह भी पानी आ जाता है...सत्ता के नाम पर ! बड़े-बड़े रईसों से मिलने वाले मान-सम्मान के नाम पर ! फिर तू किस खेत की मूली है ? अब आखिरी मौका है...एक ही ऑफर...तेरा भरपेट कल्याण करने वाली...खुद भगवान भी झड़प ले जिसे। जहाँ से बिना शर्त चुने जाओ ऐसी कॉन्सटीचुएन्सी का टिकट—लोकप्रतिनिधि की सनद जेब में रखकर मनमाना स्वार्थ साधने का एक पास ! सत्ता से लेकर मत्ता तक जब जी में आये, पाँच साल तक तिजोरी खोलने की एकमात्र चाबी ! बोल, हाँ बोल दे भैया—बोल दे हाँ—और समझ ले तुझे मैंने वह दे दी।

(मुडकर देखते हैं। सिदकर कुर्सी से गायब।)

अरे ! कहाँ गया ? कहाँ गया तू भाई ?

(सिदकर टेबल के नीचे बैठ आया है।)

(डूँढकर) बा. घंटे ! ऐसा मजाक ! बाहर निकल पहले।

निकल बाहर !

(सिदकर वैसे ही टेबल के नीचे बैठा हुआ है। मुरारराव भी उसके सामने बैठ जाते हैं।)

लालच से तू बच नहीं सकता भैया ! यह संरासर कायरता है ! यह तो रोने वाला खेल हुआ। बाहर आकर सिर्फ नम्बर बता। एक-एक नम्बर याते मेरा दिया हुआ एकाएक खजाना है खजाना ! बोल एक की दो, या दो की तीन, या फिर चार ? या पांच या सात ? कोई भी एक नम्बर बोल। बोल नम्बर। इक्का या छक्का ? सोच ले छक्का बुरा नहीं—(सिदकर वैसे ही चुप) नहीं ? अभी तक तेरा पत्थर दिल ललचाया नहीं ? अच्छा इनमें से कोई भी आकड़े एकदम दो—ठीक ! कम्पनी का दिवाला—एक में दो...एक में दो...कोई भी उठाओ...एक ही दफा दो का ब्रैकेट...चलो जल्दी करो...जल्दी करो... (सिदकर पहले की तरह ही टेबल के नीचे चुप बैठा हुआ है।) एक और तीन ? दो और पांच ? चार और सात ? या अगर चाहो तो छः और...छः ? या पांच ? कोई भी दो—कोई भी तीन—आखिरी मौका—तीन—जल्दी करो—उठाओ तीन कोई भी तीन—(सिदकर पहले की तरह ही चुप।) (मुरारराव पसीना पोछकर तेज साँस लेते हुए चक्कर लगाते हैं।) अच्छा। तुझे कुछ नहीं चाहिये ? कर्म से ही दरिद्री है तू। हठ की भी हद हो गई। बिना कुछ दिये सब कुछ मिल रहा है, वो इसे नहीं चाहिये। मुख्यमन्त्री का प्रत्यक्ष अपमान कर रहा है तू। अधिकार पाये हुए मुझे अभी चौबीस घण्टे भी नहीं हुए, लेकिन तेरी भलाई के लिए सत्ता का गैर उपयोग तक करने चला था मैं। तुझे इसकी जरा भी कद्र नहीं। बन्दर के सामने भोती डाल देने वाली बात हुई, यह तो। मेरी कोशिशें खत्म हुईं, मैं हार गया। बाहर आ, जा अब। तू जा सकता है। तेरी गोलियाँ



वापिस कर दूंगा मैं ।

(सिदकर टेबल के नीचे से बाहर आकर खड़ा हो जाता है ।)  
हृद से ज्यादा हठी है तू, लेकिन तुझे कुछ फायदा पहुंचाने की मेरी इच्छा अभी भरी नहीं । तेरे लिए नहीं, अपने दिल की तसल्ली के लिए मुझे तेरे लिए कुछ करना पड़ेगा । मेरे मन का बोझ मुझे हल्का करना ही पड़ेगा । मुझे अपनी आत्मा मुक्त करनी होगी । अपना कर्तव्य करना होगा ।

(मुरारराव चक्कर लगा रहे हैं । अचानक मुरारराव सिदकर को नीचे सीधा गिरा कर उसकी छाती पर सवार हो जाते हैं ।)  
भैया सिदकर ! आखिर नाकामयाब होकर मुझे यह रास्ता अपनाना पड़ा । फेरीवाले की जिन्दगी मेफ्टपाथ पर म्यूनिसिपैलिटी से अपनी जगह का गैर कानूनी हक लेने के लिये जो रास्ता अपनाना पड़ता था, वही रास्ता मुख्यमंत्री बन जाने के बाद भी अपनाना पड़ेगा, ऐसा मैंने स्वप्न में भी सोचा नहीं था । लेकिन कभी-कभी सत्य स्वप्न कि अपेक्षा ज्यादा अद्भुत लगता है । आदन ना रहने के बावजूद भी मैंने आज इस रास्ते को अपना ही लिया । तेरे पैर पड़ें या तेरी छाती पर सवार हो जाऊँ, इन दोनों रास्तों में से मुझे यही रास्ता ज्यादा पसंद आया । तो अब मुझे वचन दिये वगैर तेरी छुट्टी नहीं होगी । आज मैं तुझे जो एक से एक बढ़िया चीजें पेश कर रहा था, तूने उनमें से एक भी स्वीकार नहीं की । लेकिन भविष्य में जिस चीज की तुझे जरूरत होगी वो तू मुझ से ही मागेगा, यह वचन तुझे आज देना ही होगा । जब तक तू वचन नहीं देगा, तब तक मैं तुझे छोड़ूंगा नहीं । (टेलीफोन बजने लगता है ।)  
सिदकर की छाती पर बैठे-बैठे ही मुरारराव रिसीवर उठाते हैं ।) (रिसीवर पर) कौन बसाले ? पूरा गहर छान मारने पर भी तुम्हें वह नहीं मिला ? तो फिर बैठे रहिये हाथ पर हाथ

धरे। वह नहीं मिला तो अपनी रिटायरमेंट पक्की समझिये। कुछ भी करिये, उसे ढूँढ़ निकालिये। बहाने बिल्कुल नहीं सुनूँगा। नहीं, अभी जरा काम में हैं, सुबह, गुड नाईट, एण्ड स्वीट ड्रीम्स। (रिस्तीवर रख देते हैं।) बैठो चिल्लाते हुए बेटे, अच्छे पकड़ में आये हो। जब मैं फेरी वाला था तब यह फीजदार था, बहुत तंग करता था। अब चखाता है इसे भी जरा मजा। (याद आते हुए) हाँ तो मैंया...

सिदकर : जो चाहिए होगा मुझे। वो आप से माँग लूँगा। छोड़िये अब। छोड़िये। वचन देता हूँ। छोड़िये!

(मुरारराव उठ खड़े होते हैं। सिदकर भी जैसे-तैसे उठकर खड़ा हो जाता है।)

मुरार : तू राजनीति में नहीं है। इसलिये थोड़ा-बहुत सच जरूर बोलता होगा। मानना पड़ेगा।

सिदकर : साला, अब हमारी गोलियाँ दीजिये और दरवाजा खोलिये!

मुरार : दोनों की व्यवस्था है। चल!

(अन्दर जाने वाला दरवाजा खोलते हैं। सिदकर का हाथ पकड़ कर उसे बाहर जाने वाले दरवाजे की तरफ ले जाने लगते हैं। ग्रन्थेरा। प्रकाश। रात। अकेले मुरारराव सोफे पर जरा कठिनाई से सोये हुये हैं। जोर-जोर से खराटें भर रहे हैं। मंजुलाबाई आती है।)

मंजुला : यह क्या? यहीं सो गये? कब गया वो? और हॉल का दरवाजा किसने बन्द किया था? मैं तो डर गई थी, आपको कहीं कुछ कर ही ना दे वो। उसका क्या भरोसा?

मुरार : (उठकर खुशी से) मंजुला जी हमने ही उसे कुछ कर दिया। वचन ले लिया, वचन—जिन्दगी में जब भी उसे कुछ चाहिये होगा, वो हमसे ही माँगेगा। सिर्फ हमसे।

(पैर पसार कर फिर सोफे पर सोने की तैयार करते हैं।)

मजुता : यह क्या ? बेड-रूम नहीं है सोने के लिये ? मंत्री बनो चाहे मुख्यमंत्री, पुरानी आदतें नहीं छूटेंगी मरी... (मुरारराव को लेकर अन्दर चली जाती हैं ।)

(सफेद परदे पर प्रकाश । परदे पर टी० बी० अनाउन्सर—

“यह थी कल के कार्यक्रमों की रूपरेखा । आज की सभा अब समाप्त होती है । कल शाम सात बजे तक के लिये आज्ञा दीजिये । नमस्कार ।”

अनाउन्सर सस्मित नमस्कार करती है । उसके आँख मारने का आभास । सफेद परदे पर अन्धेरा ।

रंगमंच पर भी परदा)

पहला अंक समाप्त

□□□

## दूसरा अंक

(सफेद परदे पर प्रकाश। टी० वी० समाचार वक्ता और दृश्य।)

समाचार वक्ता : यह खबरें हम दूरदर्शन सेवा केन्द्र से प्रस्तुत कर रहे हैं।

डिब्बेवालों की राष्ट्रीय परिषद् का आज शहर में बड़ी धूम-धाम के साथ उद्घाटन हुआ। खास तौर से बनाये गये शाही शामियाने में एक सोने का डिब्बा खोलकर, माननीय मुख्य-मन्त्री ने इस परिषद् के उद्घाटन की घोषणा की। अध्यक्षपद से बोलते हुए सांस्कृतिक और मछली उद्योग मन्त्री श्री राव-साहब पन्हाले ने कहा\*\*\*पार्श्वभूमि में प्रदर्शनकर्ताओं की घोषणाएँ और शोर)

“शहरी संस्कृति को डिब्बेवालों की संस्कृति कहते हैं। जिसके हाथ में पालने की डोरी है,” यह मुहावरा अब बदल गया है। ‘जिस के सिर पर डिब्बों का भार, वही करेगा राष्ट्रोद्धार’ अब यह नया मुहावरा चल पड़ेगा। पालने की डोर पकड़ने वाली, अब बड़े-बड़े दफ्तरों में जा कर मोटी-मोटी फाइलों का उद्धार कर रही हैं। फिर भी हमारा देहाती डिब्बेवाला\*\*\* शहरवासियों का अन्नदाता\*\*\*वक्त आने पर प्राणों पर खेल जायेगा पर अपने काम से पीछे नहीं हटेगा, ऐसी गवाही मैं देता हूँ। क्योंकि वह मंद है\*\*\*वह राष्ट्रवादी है\*\*\* (.....की

गद्गड़ाहट ।)

(फिर से समाचार बकता)

राष्ट्रीय युवा मंच की तरफ से आज एक विचित्र प्रकार का जुलूस निकाला गया । देश की विकट परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपनी सब मांगें पाँच साल तक तहकूब रची जायें, यह मांग जुलूस के नेताओं ने मुख्यमन्त्रीजी से मिलकर उनके सामने रखी । जुलूस के राष्ट्रीय उद्देश्य का स्वागत करते हुए माननीय मुख्यमन्त्री ने नेताओं के साथ अनेक विषयों पर गूठे दिम में शानधीन की ।

शहर के चौक में धाज एक पागल से इग्गान ने आत्मदर्शन करके थोड़ी देर के लिये बातावरण में तहसका मचा दिया । सापद वह इग्गान गुरे के ह्माके में भाया था । 'मेरी शिरा-यों पर लिटने तीन सालों से रिमी ने ध्यान नहीं दिया, इसी-लिये लीची में तंग आकर और निगल होकर मैं मृद की जगा रहा हूँ ।' ऐसी शूषणा उग बका हुआ आदमियों ने पंथियाँ बाँट-का दी । बकाला जगा है कि पंथियाँ बाँटने वाले उग मृदक के लटक ही से । पुलिस ने उन आदमियों को आम जगह पर लटकती मथाने के आशेष में लिगलार कर लिया है । पुलिस का बकाला पड़ी है ।

दी। बताया जाता है कि इसके बाद सभा का काम-काज ठीक से चलता रहा। गोली-काण्ड के मृतकों की संख्या अब सात हो गई है...

सफाई कर्मचारियों की हड़ताल का आज सड़सठवाँ और सम. भौते की बातचीत का छियासठवाँ दिन है। आज भी दोनों पक्षों में बातचीत चलती रही। माननीय मुख्यमंत्री ने संवाद-दाताओं से कहा 'हम अभी भी आशावादी हैं।' 'मुख्यमंत्री समय बरबाद करके हड़ताल की सफलता को जानबूझ कर असंभव बना रहे हैं।' 'हड़ताल फिर भी जोर-शोर से जारी रहेगी', ऐसा हड़ताल कर्मचारियों ने संवाददाताओं को बताया। आज मुख्यमंत्री की पत्नी श्रीमती मंजुलादेवी ने शहर-सफाई अभियान के महिला संघ में दस मिनट भाग लेकर सफाई करने वाली महिला स्वयंसेविकाओं से पूछ-ताछ की। लायसेन्स के मामले को लेकर आज विधान सभा फिर से गूँज उठी। विरोधी दल द्वारा उपस्थित किया गया नया मुद्दा न मानते हुए माननीय सभापति ने कहा कि 'इसमें कुछ टेक्निकल कठिनाइयाँ होने के कारण यह नहीं माना जायेगा।' वाद में दिये हुए जोशीले भाषण में अपने विरोधियों पर चारों ओर से चढ़ाई करते हुए मुख्यमंत्री ने उनके सभी आरोप झूठे होने का दावा किया। "चरित्रहूनन के ऐसे हीन प्रयत्नों पर बलि होकर कभी भी मैं त्यागपत्र नहीं दूँगा।" यह बात उन्होंने फिर एक बार गरज कर कही। सत्तारूढ़ पक्ष ने इस घोषणा का स्वागत बड़े जोर-शोर से किया। इस पर विरोधी पक्ष ने सभा का त्याग कर दिया।

लायसेन्स के मामले में आज पुलिस ने शहर के प्रमुख व्यापारी और अंध सेवा समिति के अध्यक्ष श्रीयुत नाना लाल जमनादास को गिरफ्तार कर लिया और बाद में उन्हें जमानत पर छोड़

दिया गया। लायसेन्स के मामले में पकड़े गये व्यापारियों की संख्या अब आठ हो गई है।

शहर के संवाददाताओं द्वारा आयोजित एक चाय पार्टी में मुख्यमंत्री ने लायसेन्स के मामले को जड़ से उखाड़ फेंकने का आश्वासन दिया। देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार के बारे में उन्होंने चिन्ता व्यक्त की। बाहर एकत्रित प्रदर्शनकारियों पर उस समय थोड़ी लाठी चलानी पड़ी। इस लाठी काण्ड में लगभग पैंतीस लोगों के जखमी होने का समाचार मिला है। इसके बाद महिला प्रदर्शनकारियों ने मुख्यमंत्री को करीब डेढ़-घण्टे तक घेराव में रखा।

(सफेद परदे पर अँधेरा। रंगमंच पर प्रकाश। मुख्यमंत्री के नये बैंगले का सेट। रंगमंच पर मुरारराव टेलिफोन पर गरम। एक तरफ देसाई खड़ा है।)

मुरार : (रिसीवर में गुस्से से) कुछ नहीं सुनूंगा। मुझे समझाने की जरूरत नहीं है सेठजी ! सम्पादकीय का रुख सीधा है। कौन-सा ? यह मुझसे क्यों पूछ रहे हैं ? मैं करप्ट हूँ। यही और कौन-सा ? आपका सम्पादक मुझे करप्ट कहता है। नहीं कैसे ? यही कहता उसका मकसद है। मैं आपका काम करके करपान का एक नया आरोप क्यों लूँ ? मैं कुछ नहीं कर सकता। बेरी सॉरी। सम्पादक के विरुद्ध ? मैं कौन हूँ कहने वाला ? आपका सम्पादक है वो। आप चाहे तो उसे रखें या फिर निकास दें। मैंने भी अब कुछ मामलों में सस्ती बरतने की सोची है। (थोड़ी देर सुनते रहते हैं) आपका प्रश्न है, मैं कुछ नहीं कहूँगा। प्रोसीड तो होइये, देखते हैं। हाँ; लेटर दीजिये, फिर मिलिये। ठीक है, मिलिये। देख लिया जायेगा। (रिसीवर रखकर देसाई से) जरा कड़वा घूंट पिलाया है तभी आया है ठिकाने ? सम्पादक को पत्र दे रहा है, नौकरी से छुट्टी करवायेगा उसकी। वैसे

मैंने कुछ नहीं कहा उससे। मैं कौन होता हूँ, कहनेवाला ?

बेसाई : टैक्स के मामले में आपके बिना पार लगना मुश्किल है, यह बात उसकी समझ में आ गई होती। आखिर है ती बिनियों ना। अपना मतलब अच्छी तरह समझता है।

मुरार : चालाकी में तो मैं उसका बाप हूँ। सीधों से बेशक हम सीधे रहते हैं, लेकिन हमें कोई बुरा समझे तो...

बेसाई : ठीक है साब, बिल्कुल ठीक है।

मुरार : इस फटीचर सम्पादक को मैंने ही फॉरन भिजवाया था शिष्ट-मण्डल में। दो कमेटियों पर भी लिया था। इसके अलावा इसकी लड़की की शादी में खुद शरीक हो कर सौ रुपये का तोहफा दिया था। आदमी तो दो कौड़ी का भी नहीं है। चोर कहीं का ! सोचा, गरीब है, जाने दो। इतने पर भी मैं ही करप्ट ? कहता है सारे नियमों को तोड़कर यह लायसेन्स कैसे दिये ? मक्खन भी लगाता है, कहता है, "मुख्यमन्त्री के स्वच्छ चरित्र से हम पूरी तरह आश्वस्त हैं।"

बेसाई : पर साब, वो अकेला नहीं है। उसकी क्या बिसात जो इतना सब कह दे ? उसके पीछे कौन-कौन किस-किस उद्देश्य से है, सुना ही होगा आपने ?

मुरार : हाँ, जानता हूँ मैं। वो रावसाहब... (याद आने पर अत्यधिक रोषपूर्ण चेहरा।)

बेसाई : और वो टी० टी०...

मुरार : टी० टी० का तो दिमाग खराब हो गया है आजकल...

बेसाई : साब, और भी एक है उनके साथ।

मुरार : कौन ?

बेसाई : अब क्या बताऊँ साब, बेकार चुगलखोरी का इत्जाम लगेगा।

मुरार : नहीं लगेगा। कौन है वो ?

बेसाई : सबाबतें।



मुरार : कौन सदावर्त ?

देसाई : अपने सचिवालय का ।

मुरार : परिचय विभाग का डायरेक्टर ? वो ?

देसाई : वही ।

मुरार : उसका क्या ताल्लुक है ?

देसाई : उस सम्पादक के साथ उसके घनिष्ठ सम्बन्ध है ।

मुरार : अच्छा !

देसाई : सदावर्त की कविताएँ उस दैनिक के रविवारीय परिनिष्ठ में हमेशा छपती हैं । पिछले महीने कई बार वो सम्पादक और यह सदावर्त, उस ब्लू-मून बार में रात को इकट्ठे बैठकर पीते भी दिखाई दिये थे । भगवान जाने पीते-पीते क्या बातें की होंगी ! इतनी रही कविताएँ वो सम्पादक यूँ ही थोड़ी छाप देगा ? वो भी बार-बार । बदले में कुछ तो...

मुरार : सच कह रहा है ।

देसाई : कोई ना कोई भेद की बात जरूर बताई होगी उस सदावर्त ने... यूँ ही थोड़ी सम्पादकीय लिखने की हिम्मत पड़ी होगी उस फटीचर सम्पादक की ?

मुरार : (जरा विचार मग्न । फिर एकदम फोन उठाकर) कौन ? मोगरे ? जरा परिचय विभाग के प्रमुख सदावर्त से मिलाइये । ऑफिस में नहीं है ? घर पर मिलाइये । घर पर । (ठहर कर) घर पर भी नहीं है ? कहाँ है, पता लगाकर मुझे रिंग करने के लिये कहिये उसे । जल्दी । (रिसीवर रखकर) अभी छुट्टी कर देता हूँ ।

देसाई : ऐसा मत कीजिए साब... बेचारा बाल बच्चों वाला है...

मुरार : घर के भेदी के लिये कोई क्षमा नहीं, देसाई । (हमारा ही अन्न खा कर, हम से ही बेईमानी ? (रिसीवर फिर से उठाकर) मोगरे, सदावर्त जहाँ कहीं भी हो वही उसे सर्पेशन आर्डर दे

दिये जायें ।

मोगरे : (लाइन पर) पर साहब

मुरार : दीज आर माय ऑर्डर्स ।

मोगरे : (लाइन पर) पर सरकारी नौकरी मे किसी पर कुछ आरोप लगे बिना

मुरार : आरोप गये जहल्लुम मे । सदाबतों को अभी से सस्पेंड समझो, बल्कि इसी मिनट से ।

मोगरे : (जरा रुककर) अच्छा साहब, भेज देता हूँ ऑर्डर्स ।

देसाई : (मुरारराव रिसीवर रखते हैं । उसी समय) उसकी जगह किसी और को सौंपने की भी तो व्यवस्था करनी पड़ेगी साब ! कुछ भी हो काम में रुकावट नहीं पड़नी चाहिए । आजकल दिन ऐसे हैं...विरोधी दल वालों ने तो बैसे ही शोर मचा रखा है...

मुरार : उसकी जगह भरने के लिये कोई है तुम्हारी नजर में ?

देसाई : एकदम बताना तो जरा मुश्किल है साब...लेकिन अगर आप कहे तो हो जायेगा कोई एक ।

मुरार : नियुक्त कर दीजिये उसे ।

देसाई : लेकिन...वो इस विभाग का नहीं है...

मुरार : यह हमारे ऑर्डर है । अर्जी दे दीजिये, एपॉइण्टिड लिखकर साईन कर देता हूँ । घर के भेदी को निकाल ही देना चाहिये ।

देसाई : बहुत अच्छा साब ! आपकी दूरदर्शिता के क्या कहने !...एक पंथ दो काज !

मुरार : इतना कुछ करने पर भी, हम पर कुछ ना करने के इल्जाम लगाये जाते हैं ।

देसाई : राजनीति है साब ! लोग जलते हैं । आप की उन्नति चुभती है उन्हें ।

मुरार : मैं अपने काम के बल पर बना हूँ, देसाई ! आय एम ए सेल्फ

मेड मैन ! किसी से कुछ लिया-दिया नहीं मैंने ।

देसाई : यही बात है । तभी तो कुछ लोगों को आप ज्यादा ही खटकते हैं । उस पर आपकी जात...

मुरार : वो मुझे भी चुभती है कभी-कभी । पर मेरा इस जात में पैदा होना, मेरे हाथ में तो नहीं है ?

देसाई : सही है...

मुरार : लेकिन मेरी पत्नी तो ऊँची जात की है ना ?

देसाई : इसी लिये तो आप और भी ज्यादा चुभते हैं लोगों को । भाभी साहिबा की जात, उनका रूप... इस उम्र में भी कैसी— (मंजुलाबाई बाहर से आती है । साथ में एक सिपाही । उसके पास शॉपिंग के बहुत से पैकेट्स ।)

मंजुला : जाकर अन्दर रख दे । (सिपाही पैकेट्स लेकर अन्दर चला जाता है । मंजुलाबाई बैठते हुए) थक गई बाबा । महिला सभा से शहर-सफाई, वहाँ से बलब, फिर वहाँ से परली तरफ की भोपड़ियों के लोगों से बातचीत... वहाँ की औरतों ने तो तंग ही कर दिया । गाड़ी छोड़ने का ही इरादा नहीं था उनका । कुछ तो आकर सामने लेट गई ।

मुरार : घेराव डाला ?

मंजुला : आप का नाम लेने के लिये हूठ कर के बैठ गई । (शरमा जाती है ।)

देसाई : (उत्सुकता से) फिर ?

मंजुला : आपको मतलब ?

देसाई : नहीं, नहीं, ये बात नहीं...

मंजुला : (मुरारराव को) वहाँ से आते हुए मार्किटिंग भी करती आई । परदों के कपड़े एकदम टॉप मिले और कार्पेट्स तो बण्डरफुल हैं । ये उठवाकर नये बिछवायेंगे कल । फर्नीचर बहुत सुपबं था... मैंने तो भट से ऑर्डर दे दिया !

मुरार : बैसे जरूरत तो नहीं थी...जो है वो क्या बुरा है । नया ही तो है...

मंजुला : आप अपना दर्शन अपने तक ही रखिये, 'सादा जीवन उच्च विचार' । मुझसे नहीं होगा । कितने लोग आते हैं यहाँ । फॉरिनर्स भी आयेंगे । अपने देश की इमेज भी तो रहनी चाहिये दुनिया में । हमारा बंगला देखकर वो लोग क्या सोचेंगे ? फिर प्रधानमन्त्री भी तो आ रहे हैं परसों...

मुरार : खूब याद दिलाई । देसाई, आई० जी० पो० बसाले का फोन मिलाना जरा...प्रधान मन्त्री की परसो मीटिंग के बारे में कहना है कुछ...

मंजुला : उन भोपड़ियों के सुधार कार्यक्रम के लिये शुरू में कम से कम चार-एक लाख रुपये तो चाहिये होंगे हमें । सुना ना आपने ? मैंने कमेटी में बता भी दिया है...

मुरार : क्या ?

मंजुला : किसी भी तरह से दिलवा दूँगी ।

मुरार : जरूरी कामों तक के लिये यहाँ पैसा नहीं है...

मंजुला : वो सब आप जानिये । मैंने तो कह दिया है !

मुरार : अरे लेकिन, ये क्या अपने घर के पैसे हैं ?

मंजुला : भोपड़ियों का सुधार मेरे घर का काम तो नहीं है । इतने सुन्दर शहर पर वो एक कलंक है । फॉरिनर्स जब यहाँ आते होंगे, तो क्या सोचते होंगे ? देश की इज्जत तो हमेशा ही महत्वपूर्ण होती है । मैं कुछ नहीं जानती, कुछ भी कीजिये, पैसे दिलवा दीजिये । मैं बचन दे चुकी हूँ । चार लाख से कम नहीं लूँगी । बाद में उद्योगपतियों और व्यापारियों से और भी ले लूँगी । झधर-उधर से जमा किये हुए चार पैसे पर वह सेडी रामराव कमेटी में अपनी शान बधावती फिरती है—और मैं मुख्यमन्त्री की पत्नी होते हुए किसी से पीछे क्यों रहूँ ?

वेसाई : (फोन मिलाकर) साब, आई० जी० पी०—

मुरार : (रिसीवर में) कौन ? बसाले ! आज आपकी वजह से डेढ़ घंटे तक घेराव में फँसे रहे हम । महिला प्रदर्शिकाओं को हटाने के लिये महिला पुलिस ही नहीं थी वहाँ । कारण नहीं पूछ रहा हूँ मैं । अच्छा प्रधानमंत्री की पब्लिक मीटिंग की क्या व्यवस्था कर रहे हैं ? मीटिंग है, ये तो याद है ना ? पर व्यवस्था क्या कर रहे हैं ? कितनी ? चार रिजर्व बटैलियन्स ? और सादे कपड़े वाले ? ज्यादा रखिये । कुछ ज्यादा तैनात कीजिये । सभा-स्थल पर सिटी की चार बटैलियन्स काफी है । शहर में जितनी हो सके उतनी अधिक रखिये । साथ में कितने देने वाले हैं ? फिजा जरा गड़बड़ है, गफलत से काम नहीं चलेगा । मेरी नाक कट जायेगी । और देखिये हमारी घोषणाएँ जोर-शोर से घोषित होती रहे, इस काम के लिये बहुत लोगो की जरूरत पड़ेगी । विरोधियों के भी प्रदर्शन हैं । हमारी आवाजें उनसे ऊपर ना उठी तो बाद में पी० एम० हमारी बिना पानी की कर देंगे । नहीं, दल पर निर्भर नहीं रहना है । उसकी व्यवस्था अलग से की जायेगी । आपको जो काम बताये गये हैं, उनसे मतलब रखिये बसाले ! दूसरों के मामलों में पड़ना ठीक नहीं ! शहर के चौक में प्रदर्शन करने वालों की खिचड़ी बड़े जोरो-शोरों से पक रही है । उस जले हुए आदमी की राग पी० एम० को नजर करने का इरादा है उनका । हमारे आदमी जोरदार होने चाहिये । समय आने पर लड़ने की तैयारी भी रक्खनी होगी । किसी भी हालत में पी० एम० तक राग नहीं पहुँचनी चाहिये । प्रधानमंत्री की बार चौक में खानी ही नहीं चाहिए । और वो जिम्मेदारी आपकी है । गाड़ी के नीचे एकाध मर भी गया तो उसे बाद में देत सेगे । पुलिस की निरुद्ध के लोग पकड़कर में आइये । जरूरत पड़े जो दग-दम रागये

दीजिये उन्हें। जरा-सी भी ~~गुफुलत नही होनी चाहिये~~। उस दिन का पूरा कार्यक्रम ~~ठीक से~~ समझ लीजिये। देसाई मिलेंगे ही आप से। उनसे सलाह-मशवरा कर के सब कुछ तय कर लीजिये। (रिसीवर रख देते हैं।)

मंजुला : फिर कितने लाख देंगे ? भोपड़ियों के सुधार...

मुरार : (जरा चिढ़ कर) ओ मेरी माँ, मेरे सामने इससे भी बड़े सवाल हैं। (देसाई की उपस्थिति से संकोच कर) अब कैसे समझाऊँ आपको। अच्छा देखूँगा। लेकिन भोपड़ी का सुधार माने क्या ? आप करने क्या जा रही हैं ?

मंजुला : पूरी भोपड़पट्टी के चारों ओर यूकलिप्टस की घनी झाड़ी लगाई जायेगी। भोपड़ियों पर सुन्दर-सुन्दर चित्र बनवाये जायेंगे। भोपड़पट्टी के बच्चे और औरतों को अच्छे-अच्छे कपड़े बाँटे जायेंगे। यूकलिप्टस की झाड़ी से अन्दर की भोपड़ियाँ नजर नही आयेंगी। और वहाँ की बदबू भी यूकलिप्टस के सुगंध से दब जायेगी। इतने पर भी अगर किसी का ध्यान उस तरफ गया, तो सुन्दर-सुन्दर चित्रों से भोपड़ियाँ अच्छी दिखाई देंगी। बच्चे और औरतें अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए दिखाई देंगे।

देसाई : वाः, वाः ! माने सब कुछ एकदम बदल जायेगा, यूँ कहिये ना।

मंजुला : आपसे पूछा नही था, देसाई।

(फोन बजने लगता है।)

देसाई : (फोन उठाकर) यँस—

मोगरे : (लाइन पर) मैं, मोगरे, साहब को दीजिये जरा।

देसाई : क्या बात है, मुझमें कहिये।

मोगरे : (लाइन पर) साहब हैं ना वहाँ ?

देसाई : (नाराजगी से रिसीवर मुरारराव को देते हुए) यह मोगरे, कभी-कभी बहुत नखरे दिखाता है, साब !

मुरार : (रिसीवर में) हाँ। कौन ? सदावर्त ? कौन सदावर्त ?

देसाई : वही साब, परिचय विभाग का प्रमुख। आपने जिसको सस्पेंड किया है।

मुरार (स्वर में कुछ सख्ती) हाँ। बोलिये... बोल रहा हूँ। (गुस्सा हाँ कर) कितनी बार पूछेगे ? हाँ, आप को सस्पेंड कर दिया गया है। जो कुछ भी कहना हो लिखकर दीजिये। चार्जशीट वाद में दे दी जायेगी। दोष ? और वो भी मुझी से पूछ रहे है ? यू—आर—सस्पेंडिड। खरम। नही, मिलने से कोई फायदा नही। कल सुबह किसी को चार्ज दे दीजिये। और फिर कभी अपना चीखटा सचिवालय में नही दिखाइये। माईड यू। कविता कीजिये कविता।

(रिसीवर रख कर) नॉन्सेस ! पूछ रहा था ! अपराध क्या है ? इतनी हिम्मत !

(यह सब कुछ सुनकर देसाई खुश है। मंजुलाबाई अन्दर चली जाती है।)

देसाई : (जहाँ मंजुलाबाई बैठी थी वहाँ का एक अखबार उठाकर उसे कैंग्युअली देखते हुए, अनजाने में एकदम) बाप रे !

मुरार : क्या हुआ ?

देसाई : नही, कुछ नही। ये—अखबार वाले—

मुरार : अब और क्या हुआ ? कौनसा अखबार है यह ? गिरिराज ! और क्या कीचड उछाली है उसने ?

(अपसेट हो जाते हैं।)

मंजुला : (अखबार खोजती हुई अन्दर से आती है) भूल ही गई थी मैं तो। आते समय जान बूझ कर साईं थी—

मुरार : साओगी ही। मेरे विरुद्ध कीचड जो उछला जाता है उसमें !

देसाई : भाभी माहिवा के कहने का मतलब यह नही था—

मुरार : तू उसकी तरफदारी मत कर। क्या लिखा है उस अखबार में ?

देसाई : कुछ नहीं, गंदा-सा एक कार्टून है—

मंजुला : (बेतहाशा हँसने लगती है, फिर एकदम रुककर गंभीर चेहरे से) कुछ नहीं। हँसी आ गई थी।

मुरार : समय भग गया। मेरा कार्टून होगा। (देसाई) लिखा क्या है पढ़ो तो सही ?

देसाई : (बड़ी मुश्किल से सम्म्य शब्दों में बताने का प्रयत्न करते हुए) यही है सत्तारूपी मक्खन का भूखा—मोटा बिल्ला!—यही है पा—(अड़ जाता है।) कुछ नहीं। हमेशा की तरह। और आता हो क्या है उसे, साब। उसका लेवल ही यही है।

मंजुला : मेरा तो अब इन बातों से मनोरंजन होने लगा है। रोज का रोना कौन रोये ? लेकिन दिमाग कमाल का पाया है उसने। हर लेख में इतने नये-नये शब्द सूझते कैसे है उसे ?

मुरार : (गुस्से से) मेरा बस चले तो उसे जिन्दा ना छोड़ूँ—देश निकाला दे दूँ—

देसाई : (अखबार अच्छी तरह से तह लगाकर जेब में रखते हुए) लेकिन साब को इनके पीछे पड़े रहने का टाईम कहाँ है ? हाथी चले अपनी चाल —

मुरार : (देसाई की जेब में रखे अखबार को देखते हुए) वो अखबार पढ़ने के लिये तुम्हें टाईम है देसाई ?

देसाई : (अखबार जल्दी से निकालकर सोफे पर फेंकते हुए) ना ना साब...जब फेंक ही देना है तो घर जा कर कचरे की टोकरी में फेंक देता...उसमें पढ़ने लायक है क्या ? भूठ-मूठ के आरोप...जिनका न कोई तुक है...बकवास...ट्रेंश...

मुरार : हिम्मत हो तो आरोप लगा के देखें...जेल में ना डलवा दूँ ?

देसाई : इतनी हिम्मत होती तो लँगोटियाँ उतारने का ही काम क्यों करता ? (मंजुलाबाई से) माफ कीजिये भाभीसाहिबा...

मंजुला : (सोफे पर पड़ा अखबार हाथ में ले कर। उसे देखने में मस्त।



एकदम उपर देखकर) क्या हुआ ?

देसाई : जरा अदलील भाषा यूज कर बैठो—

मंजुला : कौन-सी ?

देसाई : यही—वो—लंगोटी—

मंजुला : इसमें अदलील क्या है ? मेरे कहने का मतलब (अखबार की ओर इशारा करते हुए) यह सब पढ़-पढ़ कर आजकल मुझे कुछ महसूस ही नहीं होता...

मुरार : अन्दर जाकर जरा चाय भिजवाएंगी ? (मंजुलाबाई हाँ कहती हुई अन्दर चली जाती हैं। उठते हुए अखबार उठाने के इरादे से अखबार की तरफ एक धार देखती हैं, लेकिन फिर अखबार बिना उठाये अन्दर चली जाती हैं। मुरारराय देसाई से) तू जरा आई० जी० पी० बसाले की तरफ जाकर परसों की आम सभा का बन्दोबस्त देख आ...

देसाई : (उठते हुए) बहुत अच्छा...

(सोफे पर पड़े अखबार की तरफ एक क्षण देखता रहता है।

फिर चमके हुए) गाड़ी लेकर जाता हूँ...

(देसाई जा चुका है। अब मुरारराय अकेले हैं। सोफे पर पड़े अखबार की ओर लिखते हैं; उमे उठा सेते हैं। जल्दी से अखबार एक नजर देखकर, फिर ठीक से पढ़ने लगते हैं। चेहरे पर अनुरूप भाव आते हैं। बीच में मुट्ठियाँ भिच जाती हैं। गर पर पगीना आ जाता है। टेलिफोन बजने लगता है। मुरारराय एकदम धबकाकर अखबार अपने पीछे छिपाते हैं। फिर वही रगड़कर टेलिफोन उठाते हैं।)

मोगरे : (साइन पर) हैनो, साहब...

मुरार : हाँ हैनो। (गवा साफ करते हैं।)

मोगरे : रायसाहब मिसना चाहते हैं।

मुरार : (दुग्गा में) वो...

भोगरे : (लाइन पर) आने के लिये कह दूँ उनसे साहब ?

मुरार : (गुस्से पर काबू पाते हुए) हाँ, और कर भी क्या सकते हैं ।  
(रिसीवर रख देते हैं । फोन फिर बजने लगता है । रिसीवर उठाकर) अब और क्या है ?

भोगरे : (लाइन पर) टी० टी० आये हैं ।

मुरार : रुकने के लिये कहिये उनसे । मैं जरा काम कर रहा हूँ ।  
(रिसीवर रख देते हैं । फिर से छत्रवार की तरफ बढ़ते हैं । उसे फाड़ने लगते हैं । लेकिन फाड़ने की बजाय उसे फिर वहीं कहीं छिपा देते हैं । नौकर चाय ले कर आता है । मुरारराव गुस्से के मूड में ही बैठे-बैठे चाय पीने लगते हैं । नौकर अन्दर चला जाता है । अन्दर से मुदाम आता है ।)

मुदाम : नमस्कार साहब !

मुरार : (उसे देखते हुए) आँ... उधर से कैसे आया ?

मुदाम : यँ ही, किसी खास वजह से नहीं । गाड़ी उधर के दरवाजे की तरफ पार्क की थी, इसीलिये उसी दरवाजे से चला आया । रास्ते में भाभी मिल गई, रुककर दो चार बातें उनसे भी कर लीं...

मुरार : कौसी बातें ?

मुदाम : सही आम बातें—फर्नीचर, परदे...

मुरार : अच्छा ! (चाय पीते हैं । मूड ठाक है ।) चाय लोगे ?

मुदाम : पीने चला या । और एक जगह चाय पीने जाना भी है ।  
घेराब में कोई विशेष तकलीफ तो नहीं हुई ?

मुरार : हुई भी होगी तो सहन करनी पड़ेगी । तेरे आने की कोई खास वजह ? सुबह विधान सभा में तो इकट्ठे थे हम...

मुदाम : जी हाँ । सज़ा भुँखा जाय—तो वैसे वजह खास कुछ नहीं...

मुरार : लेकिन कुछ तो जरूर होगी ?

मुदाम : हाँ, थोड़ी सलाह लेनी थी ।

मुरार : मुझसे ?

सुबाम : जी हाँ, क्यों ?

मुरार : कुछ नहीं ।

सुबाम : (जरा अस्वस्थ होते हुए) ऐसा क्यों पूछा आपने साहब ?  
जरूरत पड़ने पर मैं हमेशा आपसे ही सलाह लेता आया हूँ...  
पिता की तरह माना है आपको...

मुरार : हाँ, हाँ । पूछ जो पूछना है ।

सुबाम : (आँख ना मिलाते हुए) मतलब साहब...शायद आजकल...  
(लड़खड़ाते हुए) मेरा फोन टैप किया जा रहा है...

मुरार : अच्छा !

सुबाम : सोचता हूँ, अगर सचमुच ऐसा है तो यह बड़ी अजीब बात है । वैसे...यह कोई मामूली बात नहीं...मतलब साहब, मैं एक फुलफलीज्ड मंत्री हूँ...दल की कार्यकारणी का मँवर हूँ...और एक निष्ठावान कार्यकर्ता हूँ—लोक प्रतिनिधि हूँ—ऐसा तो अंग्रेजों के राज्य में भी नहीं हुआ...

मुरार : अंग्रेजों के जमाने में तू तीन-एक साल का होगा...

सुबाम : मेरे कहने का मतलब यह नहीं है...अपने बारे में नहीं कह रहा हूँ मैं । वैसे ही जनरल बात कर रहा था । एक मंत्री का फोन टैप होने का भय...

मुरार : अच्छी बात नहीं है यह ।

सुबाम : तब भी वह हो रही है... (लड़खड़ाते हुए) और आप...आप जानते ही होंगे इसके बारे में...

मुरार : ऐसा क्यों सोचता है तू ?

सुबाम : अगर ना भी पता हो तो मुझे करैक्ट कर सकते हैं लेकिन यह-मंत्रालय तो आप के ही हाथों में है...

मुरार : मुझे कोई जानकारी नहीं है !

सुबाम : आप कह रहे हैं इसलिए मान लेता हूँ...

मुरार : मान लेता हूँ याने ? ~~मानता ही मुद्दाम ! झूठ बोल रहा हूँ मुमु, मुदाम ?~~

मैं झूठ बोल रहा हूँ ऐसा ~~मानता ही मुद्दाम ! झूठ बोल रहा हूँ मुमु, मुदाम ?~~

मुदाम : ना...ना...बिल्कुल नहीं...

मुरार : अगर सोचते हो तो सीधा आरोप लगाओ ।

मुदाम : नहीं...यह मकसद नहीं था मेरा...

मुरार : तेरे फोन के बारे में पूछ-ताछ कर लूंगा मैं । और कुछ ?

मुदाम : और...नहीं, कुछ नहीं...

मुरार : मतलब सिर्फ इसीलिए आया था तू ?

मुदाम : यूँ ही चला आया था...

मुरार : यूँ ही आया था ! तो बैठ ना ।

मुदाम : जाना है जरा...चाय पार्टी में...

मुरार : अच्छा तो जा ।

मुदाम : (अस्वस्थता) बैसे अभी थोड़ा समय है...

मुरार : जो करना है, उसे एक बार सोच ले मुदाम । बैठूँ कि जाऊँ—

यह खरिया ठीक नहीं । (टेलिफोन बजता है । रिसीवर उठाकर) रावसाहब आ गये ?

मोगरे : (लाइन पर) चल पड़े हैं साहब । लेकिन टी० टी०...

मुरार : बिठाये रखो उन्हें (रिसीवर रख देते हैं) । पानदान लेकर बैठते हैं । पान बनाने लगते हैं ।) पान खाओगे, मुदाम ?

मुदाम : (अभी भी अस्वस्थ है) । ना ।

मुरार : तुम सोचते हो कि मैं तुम्हारा फोन टैप करवाता हूँ ?

मुदाम : (इस सीधे प्रश्न से हड़बड़ाकर) ओं ? नहीं, नहीं साहब...  
नहीं—बिल्कुल नहीं—

मुरार : तुम्हारे विश्वास का सबूत क्या है ?

मुदाम : विश्वास—मतलब...?

मुरार : पक्का विश्वास भी नहीं है ?

मुदाम : (जुबान बड़बड़ाते हुए) सच पूछा जाय तो...फोन टैप होता

है यह सच है—इस बारे में मेरी जानकारी पक्की है।

मुरार : और फोन टैप मेरे हुक्म से होता होगा—(मुदाम कुछ बोलना चाहता है। लेकिन चुप रहता है।) बोल ना। तू सोचता है मैंने ही तेरा फोन टैप करवाने का बन्दोबस्त किया है ? यही सब जायजा लेने आया है क्या तू ?

(मुदाम चुलबुलाते हुए खड़ा रहता है।)

मुरार : एक साथ काम करने वालों के लिए एक दूसरे पर ऐसा शक-शुबह करना ठीक नहीं है, मुदाम।

मुदाम : (चिढ़कर) मैं भी यही कह रहा हूँ—

मुरार : तब भी तूने मेरे बारे में इस तरह सोचा, जो तेरे पिता के समान है ?

मुदाम : मैं भी क्या करता ! वजह ही कुछ ऐसी थी—

मुरार : यह सही है मुदाम ! तेरा फोन टैप होता है। मेरे ही दिये हुए ऑड्स हैं।

मुदाम : लेकिन क्यों ?

मुरार : मंत्रिमण्डल के हर मन्त्री का फोन टैप किया जाय, यह मेरे ही ऑड्स हैं।

मुदाम : मेरा भी ? जिसकी आप पर इतनी निष्ठा है...

मुरार : निष्ठा की कीमत भी तुम्हें मिल गई ! उपमन्त्री से फुलफ्लैण्ड मन्त्री बना दिया है तुम्हें मैंने। पहले के मुख्यमन्त्री से की गई बेईमानी का इनाम।

मुदाम : बेईमानी तो सभी ने की ?

मुरार : मना कौन करता है ? इसीलिए सभी के फोन टैप करने के भी मेरे ऑड्स हैं। जो एक बार बेईमान हो सकता है वह दोबारा भी हो सकता है, मुदाम !

मुदाम : (संकोच से) यह बात आप पर भी लागू हो सकती है ..  
बेअदबी के लिए माफ कीजिए—

मुरार : अभी पाईंट मह नहीं है, क्योंकि मैं मुख्यमन्त्री हूँ। कल मुझे मात देकर तू मुख्यमन्त्री बन जायेगा तो तेरे लिए भी बेईमानी का कोई सवाल नहीं रह जायेगा। लेकिन तब तक तो मुझे तुझ पर नजर रखनी ही पड़ेगी।

सुदाम : इसका मतलब, मुझ पर आपको भरोसा नहीं रहा ?

मुरार : असल में मुझे तुम पर भरोसा कभी था ही नहीं। सौदेबाजी में सौ फीसदी भरोसा करके चलना मुझे मेरे फेरी के घन्घे ने सिखाया ही नहीं। फिर भी औरों की बजाय तुझ पर मैं ज्यादा भरोसा करता था, क्योंकि कुछ समय तक तुम्हें मेरे सहारे की जरूरत थी, लेकिन अब जिसकी जरूरत खत्म हो चुकी है।

सुदाम : साहब... (बहुत ज्यादा भावना से भर कर चुप हो जाता है।)

मुरार : अगर ऐसा न होता तो रावसाहब की अभिनन्दन सभा में तू इतने उत्साह से शामिल न होता। रावसाहब की सिद्धान्त-प्रियता और सेवा-भाव की इतनी मुंह भर-भरकर तारीफ भी न करता—

सुदाम : लेकिन... वो एक शिष्टाचार की बात थी...

मुरार : वही तो। मुझसे पूछे बिना अब तुम्हें यह सब सूझने लगा है।

सुदाम : साहब, आप तो जानते हैं कि राजनीतिक मामलों में रावसाहब और मेरी कभी बनने वाली नहीं है—उनके बारे में मेरी सही राय भी आप जानते हैं...

मुरार : मेरे बारे में भी शायद तेरी सही राय वे जानते हों। लेकिन वह सब मैं कहाँ जानता हूँ ? वही जानने के लिए ही तो फोन टैप करने की जरूरत पड़ी।

सुदाम : (दोबारा उठते हुए) चलता हूँ मैं... देर हो जायेगी...

(रावसाहब आते हैं। हाथ में चाँदी की मूँठ वाली छड़ी।)

रावसाहब : (भुक्कर) रामराम, रामराम मुरारराव ! कैसे हो सुदाम जी ?

मुरार : (सुदाम को एक तरफ ले जाकर पीरे से) इसके बारे में हम बाद में बात करेंगे। अभी कुछ मत बोल। अपनी पॉलिसी की तरह। समझे ?

(सुदाम ना समझकर भी यह सब कुछ सुन लेता है।)

अच्छा ! अब तू जा सुदाम।

(रावसाहब ध्यान से देख रहे हैं। सुदाम चला जाता है।)

रावसाहब : आज विरोधी दल को दरवाजे पर बिठा रखा है, मुरारराव !

मुरार : जिसकी जो सही जगह है वह उसे कभी न कभी दिखानी ही पड़ती है। आज इधर कैसे चले आये ?

(मंजुलाबाई बाहर आई हुई हैं—रावसाहब को देखकर फिर से अन्दर चली जाती हैं।)

रावसाहब : कोई खास बजह नहीं, इस तरफ से जा रहा था, सोचा मिलता चलूँ। सुना स्त्रियों के घेराव में फँस गये थे आप ? वैसे बुरा तो नहीं है।

मुरार : सब कहा जाय, तो आपको ही होना चाहिए था मेरी जगह।

रावसाहब : अब हमे कौन पूछता है, मुरारराव ! हमे तो अब खत्म ही समझो—

मुरार : होम डिपार्टमेंट की ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है।

रावसाहब : इतनी बारीक नजर रखते हैं हम पर ?

मुरार : मन्त्री हैं न आप। आपका संरक्षण ही तो सरकार का पहला काम है, रावसाहब !

रावसाहब : आपकी कृपा है साहिब ! लेकिन देखा जाय तो सरकार का पहला काम मुख्यमन्त्री पर व्यर्थ के आरोप लगाने वालों को कड़ी सजा देने का होना चाहिए। बहुत कीचड़ उछालता है वो गिरिराज वाला आप पर। कोई दिखा रहा था आज अखबार, लेकिन हमने तो पढा नहीं। यूँ ही गन्दी नाली में कौन हाथ डाले ? काटून भी है शायद एक गन्दा। देखा या नहीं

आपने ?

मुरार : नहीं बाबा । इतना टाईम ही कहाँ है मेरे पास ?

रावसाहब : ठीक है । लेकिन इस पर अब कोई एक्शन लेने का समय जरूर आ गया है । आखिर हर चीज की कोई हद होती है—

मुरार : अऽऽच्छा !

रावसाहब : यह चाहियातपना जितनी जल्दी हो सके, खत्म होना चाहिए । केस कर दीजिये उस पर । कुछ भी हो आखिर हमारे राज्य के मुख्यमन्त्री हैं आप—

मुरार : ऐसा सोचते हैं आप ?

रावसाहब : कुछ भी कहिये, आप ने विरोधियों को बड़ी ढील दे रखी है—  
लोकतन्त्र बगैरह सब ठीक है—लेकिन—कोई हद होती है ?

मुरार : ठीक है, लेकिन किस कदर तक हद...?

रावसाहब : आप एक्शन ले ही डालिये, दया बिल्कुल मत दिखाइये—  
मुकदमा कर दीजिए उस पर मान हानि का—

मुरार : इससे और भी ज्यादा बिकेगा अखबार, यही न ?

रावसाहब : जी ? ज्यादा बिक्री...

मुरार : वो गन्दी टीकायें लोग और भी ज्यादा शौक से पढ़ेंगे । मान-  
हानि के मुकदमे से हमारी और बदनामी होगी—विरोधियों के  
पो बारह हो जायेंगे—और शायद हमें मुख्यमन्त्री पद से उठा-  
कर बड़ी आसानी से फेंक दिया जायेगा—

रावसाहब : मेरे कहने का मतलब यह नहीं था—

मुरार : लेकिन यही सच है न ? रावसाहब आपकी संलाह के लिए मैं  
आपका बड़ा आभारी हूँ । हमसे आपको बड़ा प्यार है ।

रावसाहब : हाँ हाँ, बेशक—

मुरार : गुप्त रिपोर्ट में भी इसके काफी प्रमाण दिखाई दिए हैं हमें ।  
खुद को धन्य मानते हैं हम ।

रावसाहब : (विषय बदलते हुए) माँजी कहीं दिखाई नहीं दे रही ?



मुरार : आपकी माँजी ना ? अन्दर हैं ।

रावसाहब : (उठते हुए) अच्छा । नमस्कार कह दीजिएगा । वैसे ही आ गया था । लेकिन विरोधियों के मामले में आप कोई कड़ा निर्णय लें, ऐसी मेरी बड़ी इच्छा है, मुरारराव !

मुरार : विरोधियों का मतसब विरोधी दल वाले ही या घर के भेदी भी ?

(कुछ क्षणों तक अजीब स्तब्धता । एकदम फोन बजने लगता है ।)

रावसाहब : (निश्वास छोड़कर) फोन बज रहा है ।

मुरार : (फोन के पास जाकर रिसीवर लेते हुए) यँस भोगरे ?

भोगरे : (लाइन पर ऑकवडं होकर) साहब...

मुरार : टी० टी० न ? भेज दीजिए उन्हें अन्दर... (रिसीवर रख देते हैं ।) विरोधी दल के विरोधी को बुलवा लिया है ।

रावसाहब : बहुत इन्तजार करवाया ।

(टी० टी० आते हैं ।)

मुरार : आइये टी० टी० ! माफ करना । हाँ, आपको थोड़ा इन्तजार करना पड़ा—

(टी० टी० चुप हैं । जेब से एक छोटी-सी पुड़िया निकालकर उसमें से बभूत जैसी कोई चीज रावसाहब के माथे पर लगाते हैं ।)

रावसाहब : कँसी भभूत है, सत्यसाईं बाबा की है क्या ? आखिर आप भी उम रास्ते पर चलने लगे...

(टी० टी० मुरारराव के माथे पर भभूत लगाते हैं)

टी० टी० : और क्या करें ?

रावसाहब : अच्छा है, बहुत अच्छा है । जीवन में किसी न किसी शक्ति पर थका होनी ही चाहिए । अच्छा, चलते हैं हम मुरारराव । दी हुई सूचना पर थोड़ा विचार कीजिए । राज्य की और दल की

भलाई को देखते हुए ऐसी सूझना देना ज़रूरी समझा भी हो सकती है हमारी... अच्छा चलते हैं।

(भुककर प्रणाम करके चले जाते हैं।)

मुरार : कंसे हो टी० टी०, आजकल तो कभी घबराना ही नहीं हुआ आपका...

टी० टी० : यहाँ एक मित्र रहा करते थे हमारे। आजकल वो यहाँ नहीं रहते।

मुरार : (यह बात बुरी लगती है) अच्छा ? कहाँ गये वो ?

टी० टी० : कौन जाने कहाँ गये। यहाँ नहीं रहते।

मुरार : तो आज आप यहाँ भूलकर आ गये हैं शायद ?

टी० टी० : नहीं, मित्र से मिलने नहीं आया था। मुख्यमंत्री से मिलने आया हूँ।

मुरार : अच्छा, अच्छा ! क्या काम था मुख्यमंत्री से ?

टी० टी० : एक काम तो हो चुका !

मुरार : कौन-सा ? (थोड़ा रुककर) वो भभूत ?

टी० टी० : हाँ। (बची हुई भभूत की मुडिया देते हुए) यह बची हुई भी रख लीजिए। प्रधानमंत्री के लिए।

मुरार : प्रधानमंत्री के लिए ?

टी० टी० : पवित्र बभूत है ! किसी बाबाजी की नहीं ! खुद को जिन्दा जला डालने वाले एक इन्सान की है, इस देश के एक अभागे प्रजाजन की है।

मुरार : (उठकर खड़े हो जाते हैं। तीव्र स्वर में) टी० टी० !

टी० टी० : विरोधियों का यह एक और गन्दा कारनामा है, यही आप कहेंगे न ? लेकिन ऐसा कहकर उस मरने वाले गरीब का भजाक मत उड़ाइये, मुरारराव ! उससे उसके हालात ने ऐसा करवाया और यह हालात इस देश और इस राज्य की सरकार द्वारा ही तो पैदा किये गये हैं !

मुरार : सूखा राज्य द्वारा पैदा किया गया है ?

टी० टी० : हाँ। अनाज का नहीं। अनाज का सूखा तो वैसे भी हर साल अपने देश में कहीं न कहीं पड़ता ही है। उससे निराश होकर कोई खुद को जला नहीं डालता। हमारे देश का आदमी बड़ा ढीठ है। लेकिन आपने जो सूखा पैदा किया है वो आशा का है।

मुरार : ऐसा आप लोग तो कहेंगे ही। आप का काम जो बनता है इससे। सरकार द्वारा किये गये कामों की तरफ ध्यान ना देकर उसके द्वारा ना किये जाने वाले कामों को बढ़ा-चढ़ाकर बताना—यही तो है आपकी राजनीति।

टी० टी० : वैसे सरकार द्वारा किया गया कोई काम हम भूलते नहीं। भगलन सत्ताईस तारीख का गोली-काण्ड।

मुरार : (गुस्से से बेकाबू) उसके हालात आप जूँसे विरोधियों द्वारा पैदा किये गये थे, टी० टी० !

टी० टी० : क्यों नहीं। इस सरकार को किसी भी तरह बदनाम करके उस से सत्ता खसोटना हमारे अस्तित्व के लिये जैसे जरूरी है। लेकिन क्या अपना दिमाग गिरवी रखकर पुलिस द्वारा गोली चलवाना काबिले-तारीफ है ?

मुरार : कानून और व्यवस्था की दृष्टि से ऐसा निहायत जरूरी था। नहीं तो क्या दंगा-फसादियों के चुम्बन लेकर पुलिस उन्हें आलिगन में लेती ?

टी० टी० : जो मारे गये वो क्या दंगा-फसादिये थे ? लंगडा भिखारी, सात साल का लड़का, घर के दरवाजे में बैठकर चावल साफ करने वाली गृहिणी...

मुरार : एक बार गोली चलनी शुरू हो जाये तो प्रत्येक गोली बिल्कुल निशाना लगाकर नहीं दागी जाती। उस पर वो इसका घनी बस्ती वाला था। यह बात जानते हुए भी आप जानबूझ कर

चिल्ला रहे हैं टी० टी० ?

टी० टी० : फिर वही बात ! हम तो जानबूझ कर चिल्लायेगे, लेकिन आपके जुनूनों से लोकहित कैसे हो सकेगा ? और वो लायसेन्स वाला मामला...

मुरार : उसकी चर्चा की यहाँ जरूरत नहीं—

टी० टी० : विधान सभा में भी आपने इसकी चर्चा नहीं होने दी—

मुरार : वो सभापति का निर्णय था ।

टी० टी० : सभापति भी तो आपका था ।

मुरार : यह सरासर आरोप लगाया जा रहा है...सभापति पर...

टी० टी० : लेकिन यह सच है ।

मुरार : फिर खुले आम लगाइये आरोप । मैं आपको चेतावनी देता हूँ, टी० टी० !

टी० टी० : देवकूफों की तरह ऐसी चेतावनियाँ स्वीकार करके जेल जाने की इच्छा नहीं है हमारी । लेकिन इतना तो आप भी जानते हैं मुरारराव कि आरोप एकदम सही है । ध्वर्थ मुकरने से क्या फायदा ? लायसेन्स वाला भ्रमेला भी सही है ।

मुरार : अच्छा तो आज आप इसीलिये आये हैं ? इतने दिनों बाद ?

टी० टी० : आने का दूसरा कारण भी है । मैं आपको एक-दो सूचनायें पहले से देने आया हूँ ।

मुरार : 'दोस्ती' की सूचनायें ?

टी० टी० : नहीं, सिर्फ सूचनायें । हमारे मित्र आजकल यहाँ नहीं रहते । सूचनायें माननीय मुख्यमंत्री के लिये ही है ।

मुरार : क्या ?

टी० टी० : खुद को जला डालने वाले उस आदमी की राख लेकर परसों हम प्रधानमंत्री की गाड़ी के सामने लेटने वाले हैं । वो राख प्रधानमंत्री अपने माथे से लगायें, यह हमारी माँग होगी ।

मुरार : ऐसा आपको करने ही नहीं दिया जायेगा । इसकी पूरी व्यवस्था

कर दी जायेगी ।

टी० टी० : और हम यह करके रहेगे । हमने भी इसकी पूरी व्यवस्था कर ली है । लायसेन्स-भ्रमेले की चर्चा भी जब तक खुलकर नहीं होगी, तब तक विरोधी दल विधान सभा और विधान परिषद का काम ठीक से चलने नहीं देगा, आज हमने यह फैसला कर लिया है । कल से यह फैसला लागू किया जायेगा । हम पूरी ताकत से शोर मचायेंगे ।

मुरार : (गुस्से में) बहुत अच्छा ! सूचनाओं के लिये मुख्यमंत्री आपके आभारी हैं ।

टी० टी० : इससे अनेक विधायक बिल, बेकार बीच में लटक जायेंगे ।

मुरार : उसकी फिक्र आप क्यों करते हैं ?

टी० टी० : क्योंकि आपकी तरह, अभी हम बेशर्म नहीं हुये । लोगों ने हमें अपने कामों के लिये चुना है, इसका हमें अभी पूरा अहसास है ।

मुरार : हमारे लोकहित के प्रयासों पर भी तुम जहरीली टीका करते हो, क्या यह उसी का सबूत है ?

टी० टी० : वह टीका सिद्धान्त पर होती है, प्रयासों पर नहीं । मतलब वह टीका आप पर होती है ।

मुरार : मतलब हम जनता की जो भलाई करते हैं, उसे आप नहीं चाहते—

टी० टी० : क्योंकि आपका सत्ता में रहना लोगों के हित में नहीं है, ऐसा हमारा विश्वास है । जो सरकार निरपराध लोगों पर गोलियाँ चलवाती है, जहाँ आदमी खुद की जिंदा जला डालते हैं और सरकार के कान पर जूँ तक नहीं रेंगती, बल्कि वह समाज के भ्रष्ट सरमायेदारों और अपराधियों को सुरक्षण देती है, और इसी भ्रष्टाचार की मिलोभगत के दम से अपना अस्तित्व बनाये रखती है, वह घोखे के सिवा और क्या हो सकती है ?

टी० टी० : तो आप आ जाइये सत्ता में, तब अच्छी तरह समझ जायेंगे कि

बेबुनियाद प्रतिक्रियायें दिखाना कितना आसान होता है...

टी० टी० : आप खाली तो कीजिये कुर्सियाँ, एक बार सत्ता देकर हमें एकस्पोज करने के लिये। इसके लिये भी कुर्सियाँ नहीं छोड़ सकते आप? अरे कपड़े उतार लिये जायें तो भी कुर्सी पकड़े रहेगे आप...। नंगे रह लेंगे, पर सत्ता के बिना नहीं सरेगा आपका—!

मुरार : (एकदम भड़क उठते हैं) स्टॉप इट! स्टॉप इट आय से! (कमीज की बाँहें ऊपर करते हुये) साला भैनचोद! बन्द करो बकवास नहीं तो...

टी० टी० : चलो हो जाने दो, मैं भी किसी कच्चे गुरु का चेला नहीं हूँ। (दोनों की पोलीसन द्वन्द्वयुद्ध की। नौकर आकर जल्दी से भाँकते हैं। यह सुनकर मंजुलाबाई भी अन्दर से आ जाती हैं।)

मंजुला : (देखकर) क्या हुआ? कौन है? टी० टी० !

टी० टी० : (ढीले पडकर) नमस्कार भाभी जी !

मंजुला : क्या हो रहा था? क्यों गुस्सा दिलवाया इन्हें? (मुरार राव से) आप शान्त हो जाइये। ब्लडप्रेसर की तकलीफ है आपको, इतना गुस्सा क्यों करते हैं? डॉक्टर ने क्या बताया है? बिल्कुल शान्त रहिये। दस मिनट तक आँखें बन्द करके चुपचाप बैठे रहिये यहाँ (उन्हें एक तरफ बिठा देती है। टी० टी० को जरा एक तरफ ले जा कर) आप क्यों नहीं समझते टी०-टी० ! पहले से ही राज्य की जिम्मेदारी इनके सर पर है और आप है कि बेवक्त आकर आदमी को और गुस्सा दिलाते हैं।

टी० टी० : मैंने उन्हें गुस्सा नहीं दिलवाया। खुद ही गुस्सा हो गये। मैं तो सिर्फ हालात से वाकिफ करा रहा था उन्हें।

मंजुला : लेकिन अभी ना कराते, तो क्या बिगड़ जाता? आजकल ब्लडप्रेसर बहुत बढ़ने लग गया है इनका।

टी० टी० : हमारा भी बढ़ने लग गया है। अभी परसों चेक-अप करवाया है।

मंजुला : तो फिर आपको बहुत सँभलकर रहना चाहिये। (कुछ सूझता है। उत्साह से) मैं कहती हूँ—आप ऐसा क्यों नहीं करते ?

टी० टी० : क्या ?

मंजुला : आप—मतलब विरोधी दल—साल-भर के लिये अपना विरोध अपने तक ही क्यों नहीं रख लेते ?

टी० टी० : अच्छा !

मंजुला : ज्यादा नहीं। सिर्फ साल-भर। मैं सोचती हूँ रोज-रोज के विरोध से किसी का भी ब्लडप्रेशर बढ़ सकता है।

टी० टी० : सर चकरा जाता है। रोज-रोज वही आरोप, वही प्रमाण। लेकिन इन लोगो पर किसी तरह के असर का तो नाम ही मत लो।

मंजुला : इसीलिये तो कह रही हूँ, साल-भर विरोध बन्द करके देखिये।

टी० टी० : और उन्हें क्या मनमानी करने दें ?

मंजुला : वैसे भी नतीजा क्या होता है ? आप ही तो कह रहे थे कि सारी भुसीबत्ते आप को ही हैं।

टी० टी० : मान लेते हैं कि साल-भर मनमानी करके, थक जायें ये शायद जरूरी नहीं। लेकिन हाँ एक सम्भावना है, पेट भर खाने के बाद कुछ देर के लिये आदमी की खाने की वासन्ता मर जाती है। तो शायद थोड़े दिन के लिये इनका काम भी सफाई से चलने लगे।

मंजुला : क्या बात कही है ! तो फिर अमल कबसे करना शुरू करेंगे ?

टी० टी० : मैं कीन होता हूँ अमल करते वाला ? और भी तो लोग हैं हमारे—प्रतिदिन सरकार का विरोध करते-करते विरोध की आदत ही हो गई है उनकी। आपस में भी हमेशा विरोध।

मंजुला : उन्हें समझाइये।

टी० टी० : ऐसा कीजिये भाभी जी ! एक बार आप खुद आकर क्यों नहीं समझाती ?

मंजुला : लेकिन मेरा आना ठीक नहीं होगा । मुख्यमंत्री की पत्नी विरोधी दल की सभा में ! इनके इमेज को चोट नहीं आयेगी क्या ?

टी० टी० : यह तो सच है । लेकिन बाद में ऐसी घोषणा करवा दीजिए कि मेरे पति मेरी इस भूमिका से सहमत नहीं हैं । एक व्यक्ति के नाते अपनी भूमिका अलग से सामने रखने का मुझे पूरा हक है । नहीं तो वेश बदल कर सभा में आ जाइये ।

मंजुला : (उत्साह से) मुझसे हो सकेगा ऐसा ? स्कूल में नाटक में काम किया करती थी ।

टी० टी० : मुख्यमंत्री की पत्नी से क्या नहीं होगा ? जो दिल में आये, वह कर सकती हैं आप । अभी ही देख लीजिये न, पूरे देश में न मिलने वाली चीजें आप को आसानी से हासिल है ।

मंजुला : हासिल नहीं की है, खुद-ब-खुद चली आई हैं । यह मुख्यमंत्री हैं न; इमीलिये कोई न कोई मेंट देता रहता है । मना करने पर भी मानते धोड़े है लोग ?

टी० टी० : सच कह रही है !

मंजुला : कई बार तो उन्हें पता भी नहीं होता । मुझे ही लेना पड़ता है । उन्हें बताइये नहीं, हाँ । वैसे तो कही भी मत बताइये । बेकार बात का बतंगड़ बनेगा ।

टी० टी० : बिल्कुल नहीं बताऊँगा । लेकिन आता कौन-कौन है भाभी जी, वह सारी चीजें लेकर ?

मंजुला : किसी से कहेंगे तो नहीं ?

टी० टी० : नहीं ।

मंजुला : छोड़िये—

टी० टी० : बताइये भी—



मंजुसा : नानालाल, जमनादास, वो यूनुस मुहम्मद, अशोक सेठिया,  
और भी बहुत-से आते हैं। अच्छे हैं सभी लोग।

टी० टी० : होंगे ही + और कौन-कौन ?

मंजुसा : नहीं, इतने काफी हैं।

टी० टी० : फिर भी ?

मंजुसा : छोड़िये ना। नाम में क्या रखा है ?

टी० टी० : कुछ नहीं। (उठते हैं) अच्छा भाभी जी, चलता हूँ अब मैं।

मंजुसा : तो मैं आऊँ आपकी सभा में ? क्योंकि भाषण पहले से तैयार  
करना पड़ेगा मुझे—

टी० टी० : भाषण तैयार रखिये आप। कही-ना-कही काम आ ही  
जायेगा।

मंजुसा : और कुछ नहीं, उनके सर का बोझ थोड़ा हल्का कर सकूँ, यही  
सोचती हूँ।

टी० टी० : ठीक सोचती हैं।

मंजुसा : और एक बात मेरे दिल में थी। पूछूँ ?

टी० टी० : बेशक !

मंजुसा : दूसरे किसी को पूछो भी तो मुरीबत ! बाय दी वे, ये अभिनेत्री  
तिलोत्तमा कैसी है ?

टी० टी० : अभिनेत्री तिलोत्तमा ! क्यों भई ? अभिनेत्री की पूछ-ताछ  
क्यों ?

मंजुसा : ऐसे ही। कैसी है वो ?

टी० टी० : पता नहीं। आपके पति के पीछे पड़ी रहने वाली इन अभि-  
नेत्रियों की एन्ववायरी करने का समय कहाँ होता है हमारे  
पास ! लेकिन जब अभिनेत्री है वो तो सुन्दर होगी ही।

मंजुसा : जवान भी होगी ?

टी० टी० : बिल्कुल ! सँक्सी भी होगी !

मंजुसा : तो फिर ठीक ही है।

टी०टी० : क्या ? क्या ठीक है ?

मंजुला : कुछ नहीं । यह पेपरवाले कुछ भी छाप देते हैं । आज उस गिरिराज में पड़ा था ।

टी०टी० : किसके बारे में ?

मंजुला : आपने नहीं पढ़ा ? ये—और वह—एक बड़े होटल में—आगे नहीं बता सकती । कुछ भी हो हम सम्य लोग हैं । पेपरवालों के मुंह कौन लगे ? लेकिन इनकी बहुत भद् उड़ गई । उम्र भी तो हो गई है अब इनकी । पर मैं कहती हूँ, चीफ मिनिस्टर के बारे में लोग ऐसे कैसे छाप सकते हैं ?

टी०टी० : उन्हें तो जेल में बन्द करवा देना चाहिये । आप कहिये मुरार-राव से ।

मंजुला : सीधे नाम तक ले लेते हैं ।

टी०टी० : कमाल है उनकी !

मंजुला : मैं तो केस करने की सोच रही हूँ । मैं चीफ मिनिस्टर की पत्नी हूँ । मुझे अपने पति की इमेज का कुछ तो अभिमान होना चाहिए ।

टी०टी० : बेशक होना चाहिये ! तो फिर चलूँ मैं ?

मंजुला : हाँ । जब आपके दल की मीटिंग हो तब खबर भिजवा दीजिये ।

टी०टी० : जहर ।

(टी० टी० जाते हैं । फोन बजने लगता है । मंजुलाबाई फोन लेती है ।)

मंजुला : (रिसीवर पर) हैलो—चीफ मिनिस्टर नहीं हैं—नहीं हैं याने नहीं हैं, एक दफा कहा ना! फिर ? मैं उनकी पत्नी बोल रही हूँ । आप कौन ? कौन नानालाल ? नानालाल जमनादास ? (एकदम ध्यान आकर) हाँ, हाँ । आप हैं, वो नानालाल ? कैसे हैं ? पकड़े गये थे ? जमानत पर छूटे हैं ? आप जंते

इन्सान को भी पकड़ते हैं, कमाल है इन पुलिस वालों की भी !  
 हीरे की अँगूठी ना ? ठीक आ गई थी। बहुत अच्छी है। इनसे  
 मिलना है ? आइये ना, आइये। कब आयेंगे ? हाँ, हाँ, रात  
 को देर से ना ? जरूर आइये। पीछे का दरवाजा खुला  
 रखूंगी। आप जैसों के लिये तो हमारे बँगले के सभी दरवाजे  
 हमेशा के लिये खुले हैं नानालाल जी, आइयेगा। हाँ, खबर कर  
 दूंगी। अच्छा ! (रिसीवर रख देती हैं।)  
 (अन्धेरा।)

फिर प्रकाश।

वही दीवानखाना। हल्की रोशनी में सिगरेट पीते हुए कोई  
 पीठ किये हुए बैठा है। घड़ी की टिक-टिक। मुरारराव आते  
 हैं।)

मुरार : (बड़ी लाईट जलाते हुए) कहिये नानालाल जी !

(वो बैठा हुआ आदमी एकदम से घूम जाता है। नाक पर  
 गॉगल। दाढ़ी नहीं है। पहली नजर में पहचान में नहीं आता।)

मुरार : (घबराकर) कौन ? (शरीर काँप रहा है) कौन—कौन हैं  
 आप ?

सिवकर : पहचाना नहीं प्यारे ?

मुरार : प्यारे ! कौन प्यारे ?

सिवकर : तेरी जिन्दगी का पार्टनर।

मुरार : कैसा पार्टनर ! कौन पार्टनर !

सिवकर : मैं तेरा भाई। खाना जो मिले दोनों खायें, खुशी-खुशी डकार  
 लें।

मुरार : एकदम पागल दिखता है।

सिवकर : और तू ! उल्लू का पट्टा ! (रहस्यपूर्ण हँसी हँसता है।)

मुरार : मुंह सम्भालकर बात कर... नानालाल कहाँ है ?

सिवकर : (मुरारराव की पीठ पर थपकी देते हुए) अबे छोड़ यार

नानालाल की बात...

मुरार : (दूर होते हुए) किसकी पीठ पर थपकी दे रहा है ? और ऊपर से ये बेअदबी !

सिंदकर : (लाड़ से मुरारराव का कॉलर खींचते हुए) माहूँ ! माहूँ ! क्यों वे ! इतने दिनों के बाद मिला है और ऊपर से अकड़ता है ! (कॉलर छोड़कर) भल पान निकाल !

मुरार : नौकर नहीं हूँ...

सिंदकर : खाली-पीली बकबक मत कर यार, पान बना । बना तो !

मुरार : तू... (पहचान कर) सिंदकर ! भैया सिंदकर !

सिंदकर : नहीं तो क्या उसका बाप ? (मुरारराव के गले में हाथ डालकर) कितने दिनों के बाद मिले हैं हम, है ना ?

मुरार : (अपने आप को छुड़ाते हुए) गले से हाथ हटा पहले ।

सिंदकर : (हाथ हटाते हुए) अच्छा यार, ते हटा ही लिया । लेकिन बहुत खुशी हुई तुझसे मिलकर । रोज सोचता था आज मिलूंगा, कल मिलूंगा, लेकिन मिल ही नहीं सका । शहर से बाहर था मैं ।

मुरार : शहर से बाहर ?

सिंदकर : एक-दो जगह मारपीट की । पुलिस ने शहर से बाहर निकाल दिया । आज मेरी सजा का वक़्त पूरा हो गया, सोचा पहले तुम्हीं से मिल लूँ ।

मुरार : राज्य के मुख्यमन्त्री के साथ एकवचन में बात कर रहा है तू ?

सिंदकर : हम तो भगवान से भी यूँ ही बात करते हैं एकवचन में, यार-यार करके, और तू तो मेरा पार्टनर है, मेरा दोस्त ! मेरा भाई ! एक घाली में खायेँ (हँसता है) हमें तो हमेशा तेरी अपनी उस मुलाकात की याद आती है । बड़ा मजा आया था !

मुरार : क्या काम है मुझसे ?

सिंदकर : गोली मार काम को । इतने दिन के बाद मिला है, बड़ा अच्छा

सग रहा है।

(एकदम मुरारराव को नीचे गिराकर उनकी छाती पर सवार हो जाता है। फिर हँसते हुए) ऐसे ही गिराया था ना तूने मुझे उस रात, याद है ?

मुरार : (साँस फूली हुई) पहले तू एक तरफ हो। उठ ! कोई देख लेगा।

सिंदकर : (उठकर दूर होते हुए) ले हो गया यार, सब कुछ याद आ रहा है। (इधर-उधर घूमते हुए) तुझे याद है ?

मुरार : (बड़ी मुश्किल से उठकर, कपड़े झाड़ते हुए) तुझे काम क्या है बता, और यहाँ से जा। मैं खाली नहीं हूँ।

सिंदकर : इतनी रात को भी तू खाली नहीं है ? (गाल पर प्यार से चपत लगाते हुए) क्यों रे मुरारी ?

मुरार : (गाल भटकते हुए) मुरारराव !

सिंदकर : एक जिन्दगी के हिस्सेदार हैं हम ! लेकिन तू तो है मुरारराव, और मैं ? मैं क्या सिर्फ "भैया" ? तू मुख्यमन्त्री और मैं शहर से निकाला हुआ एक गुण्डा ? सलीबी अजीब बात है। हम एक फोटो खिचवा लेते !

मुरार : कोई काम हो तो बता, नहीं तो चलता दिस यहाँ से।

सिंदकर : अबे मुरारी के बच्चे, किसके सामने नखरे दिखाता है ? साले मेरी बजह से तू है। मैंने तुझे अपनी किडनी दी, इसीलिए तू बच गया। मेरी किडनी पर जो रहा है और मुझी से अकड़ता है ? ए—क दूंगा...

(हाथ उठाता है। मुरारराव पीछे हट जाते हैं। सिंदकर हाथ नीचे करके हँसते हुए) डरपोक ! हम इतने निडर और साते तू मुख्यमन्त्री हो कर भी इतना डरपोक ? हमारा पार्टनर ! (जेब से चार मिनार सिगरेट का पॅकेट निकालकर एक सिगरेट मुँह में लेकर, फिर मुरारराव को ऑफर करते हुए) ले ! सिग-

रेट ले। ले भी यार। चाहे तूने पान नहीं खिलाया, लेकिन हम तुझे सिगरेट पिलायेंगे। ले (डाँटकर) ले !

(मुरारराव जल्दी से सिगरेट ले लेते हैं। सिंदकर पहले अपनी सिगरेट मुलगाता है, फिर मुरारराव की।)

सिंदकर : (कश ले कर) मजा आ गया। काम-काज कैसा चल रहा है तेरा ! सब कुछ जोश में है न ? मजा आता है न मुख्यमन्त्री बन के ? क्यों बे कितना पैसा बना लिया ? दो चार करोड़ ? या पाँच पचास लाख ? साला हम कही बकेगा नहीं यार... तूने क्या कहा था, याद है ? शरीर दो है, पर आत्मा एक है ! आत्मा याने ? किडनी ? हाँ तो कितनी एस्टेट बना ली ? कुछ गड़बड़ घोटाला ? उस लायसेन्स के घोटाले से कितने बना लिये ?

मुरार : गोली...गोली नहीं है शायद तेरे पास ? गोली !

सिंदकर : क्यों ? तुझे चाहिये ? तेरे पास तो दूसरी गोली है। (बन्दूक दागने जैसा इशारा करता है।) साली एकदम ऊपर पहुँचा देने वाली ! सात साल के लड़के को गोली मारता है तू ? सुना है घर में बैठी चावल साफ करने वाली औरत को भी तू सीधे ऊपर पहुँचा देता है। साला लँगड़े भिखारी को भी गोली !

मुरार : वह मैंने नहीं चलाई।

सिंदकर : हट साले, कबूल करने की भी हिम्मत नहीं है तेरे पास।

मुरार : हिम्मत का सबाल नहीं है यह। जहाँ-जहाँ गोली चले वहाँ-वहाँ मुख्यमन्त्री खुद भी हाजिर हो, अगर ऐसी सोगों की माँग हो तो...

सिंदकर : (नाक की एक साइड पर उँगल; रखकर) नम्ररे कितने करता है ? किडनी की कसम ले कर बोल यार...

मुरार : तेरा काम क्या है ? तू बस उतना कह दे। रात बहुत हो रही है। सुबह फिर मुझे बहुत से काम हैं। सुबह जल्दी उठकर कुछ

फाइलें भी देखनी हैं।

सिंदकर : वैसे देखा जाय तो शहर के सारे दादा और दादू-भट्ठी वाले तेरे दल में हैं।

मुरार : फालतू बातें नहीं चाहिये—

सिंदकर : ऑल-राइट ! नहीं चाहिये तो ना सही। तूने एक बार हमसे वचन लिया था, याद है ? तुझे याद ना हो तो कोई बात नहीं। पर मुझे अच्छी तरह से याद है। जिन्दगी में हमें किसी बीज की जरूरत आन पड़े तो हम तुझी से मांगें। मेरी छाती पर बैठकर तूने यह वचन लिया था। याद आया ?

मुरार : लिया होगा।

सिंदकर : चाहे तू ना हो, लेकिन हम वचन के सच्चे हैं। वह वचन हम कभी भूले नहीं। पर माला तेरे से कुछ मांगा जाय, ऐसा कभी हमें लगा ही नहीं। आजकल लगने लगा है कि कुछ मांग ही लिया जाय। मांगना ही पड़ेगा। सिफं तू वह दे सकता है और मैं मांग सकता हूँ।

मुरार : ऐसा क्या है ?

सिंदकर : (कस लेकर शान्त स्वर में) किडनी !

मुरार : क्या ?

सिंदकर : मेरी किडनी। बहो—जो तेरे पेट में लगाई गई थी। या उसे भी भूल गया ?

मुरार : हाँ !

सिंदकर : कब देगा ?

मुरार : क्या ?

सिंदकर : मेरी किडनी तुझे वापिस कब देगा ?

मुरार : होश में तो है ना तू ?

सिंदकर : देख यार, नखरे मत कर। किडनी की बात कर ?

मुरार : अरे क्या कह क्या रहा है तू ?

सिंदकर : अपनी किडनी हमें वापस चाहिये बस !

मुरार : किडनी-बिडनी भी कही वापिस मांगी जाती है...

सिंदकर : हम मांग रहे हैं। हमें चाहिए वह। तूने क्या कहा था, याद कर। मुझे कभी भी कुछ चाहिये हो तो तुझमे ही मांगूँ। मुझसे ऐसा वचन लिया था तूने।

मुरार : इसका यह मतलब नहीं कि तू किडनी मांगे।

सिंदकर : यह हमारे मर्जी की बात है। हमारे दिल में जो आयेगा वही मांगेगे। यह मत मांगना, वह मांगना, ऐसा उस वक्त तूने कहा था क्या ?

मुरार : लेकिन ऐसी अजीब मांग...

सिंदकर : पार, सेभलकर बात कर। किडनी किसकी है ?

मुरार : जब ली थी तब तेरी थी—

सिंदकर : उसी की वजह से तू जिन्दा रहा ना ? साफ़ साफ़ बोल...

मुरार : हाँ !

सिंदकर : इसका मतलब मेरी वजह से तू जिया। तेरे जिन्दा रहने में मेरी हिस्सेदारी है। ऐसा तूने ही कहा था।

मुरार : इसीलिए क्या किडनी...

सिंदकर : बहुत हो चुकी हमारी हिस्सेदारी। आगे से हमें नहीं चाहिये तेरी हिस्सेदारी। जब अपना हिस्सा हमें वापिस चाहिये, तो किडनी ही तो मांगूंगा ? बोल ! नहीं मांगूंगा क्या ?

मुरार : यह देख सिंदकर—

सिंदकर : चीफ़ मिनिस्टर, खाली-पीली, फिज़ूल बातें मत कर। जब मैंने तुझे किडनी दी थी तब किसी ने हमसे जबरदस्ती की थी क्या ? हमारी खुशी का सवाल था न वो। हमने तुझे देखा तक नहीं था, काला है या गोरा है। तू तब चीफ़ मिनिस्टर कहाँ था ? साला तू कौन था, यह भी हम नहीं जानते थे। मैंने तुझे किडनी क्यों दी ? सिर्फ़ अपनी खुशी। बस। अब वैसे ही अपनी किडनी



हमें वापस चाहिये... हमारी खुशी। बोल कब देगा ?

मुरार : (होशियार होने लगते हैं) देख सिदकर, कल सुबह, नही तो परसों मेरे पी० ए० को फोन करके अपॉइंटमेण्ट ले ले, फिर हम इसके बारे में...

सिदकर : नही अपने पास टाईम नही है। अभी ठहरा ले जो ठहराना है।

मुरार : लेकिन तू अभी सुनने की हालत में नही है।

सिदकर : क्योंकि अपना विचार पक्का है। अपनी चीज कब वापिस लेनी है, इसका फैसला कोई दूसरा क्यों करे ? खुद फैसला करेंगे। तेरे साथ हमें हिस्सेदारी नही चाहिये, बस्स ! ज्यादा बोलने की जरूरत नही है। तू हमारी किडनी लौटा दे, मामला खत्म !

मुरार : पैसे लौटाने की तरह आसान तो नही है यह ?

सिदकर : जब हमने तुझे किडनी दी थी, तब क्या आसान था ? साला, जिन्दगी और मौत का सवाल था। बड़ा ऑपरेशन था। तब दी थी या नही हमने किडनी ?

मुरार : लेकिन...

सिदकर : जैसे दी थी, वैसे हम वापिस माँगते हैं। लेते वक़्त कैसे जल्दी से ले ली थी ? वैसे ही दे डाल अब !

मुरार : देख सिदकर, किडनी देने के तेरे हीसले की जितनी तारीफ़ की जाय, उतनी कम है—

सिदकर : बकबक मत कर। किडनी दे !

मुरार : ठीक है। हम इस सवाल पर जरा अच्छी तरह सोचते हैं।

सिदकर ! तेरे दिल में यह स्याल आया कैसे ?

सिदकर : सच कहूँ चीफ-मिनिस्टर ? साली एक दिन सुबह हमें जाग आई और सोचा कि एक इन्सान की जिन्दगी के हम हिस्सेदार हैं। पार्टनर हैं। हमारी एक किडनी उसके पेट में है। और अपने पास साली एक ही किडनी है। और वो हमारा पार्टनर माने तू है...! एकदम साला सर फिर गँया। ऐसा कमीना

पार्टनर ? ऐसे काले-घन्धे में हिस्सेदारी ? गरीबों के पेट कीट कर राज्य में लफड़ेबाजी करने वाले इन्सान के साथ पार्टनरशिप ? साला इससे तो शराब की भट्टीवाला अच्छा है !

मुरार : सिदकर, तेरा दिमाग भी शायद विरोधियों और अखबारवालों के ऊल-जलूल प्रचार से बिगड़ गया है ।

सिदकर : भूठ ! हम कभी अखबार पढ़ते ही नहीं । लेकिन हर जगह घूमते हैं हम और आँख, कान खुले रखते हैं । चाहे बाकी सब कुछ नशे में गायब हो जाय (सर की तरफ इशारा करते हुए) पर यह होश में रहता है । सब चीजें बराबर अन्दर नोट होती रहती है । चीफ मिनिस्टर, तू पत्थर दिल इन्सान, गरीबों को तंग करता है । अमीरों के मजे करवाकर, उनसे समझौता करके अपनी जेब भरने वाला, तू बहुत बड़ा जेब-कतारा है ।

मुरार : सिदकर !

सिदकर : तू बेगुनाहों की जान लेकर अपनी जान बचाने वाला जालिम खूनी है ।

मुरार : शटअप सिदकर...

सिदकर : तू शरीफ लोगों के वोट निगलकर डाकुओं के दल में शामिल एक धोखेबाज लीडर है ।

मुरार : सिदकर, एक चीफ मिनिस्टर के सामने यह सब बक रहा है तू ?

सिदकर : तू सिर्फ चीफ मिनिस्टर की खाल ओढ़ने वाला डरपोक गीदड़ है । सब लोग भी यही कहते हैं ।

मुरार : तुम्हें—तुम्हें जेल भिजवा दूँगा । देश निकाला दे दूँगा ।

सिदकर : ए, डर किसे दिखाता है ? हम यह सब कुछ कर चुके हैं ! हमारी किडनी निकाल दे, बस, । बाकी बातें फिर । ऐसे नालायक और पत्थर दिल इन्सान से पार्टनरशिप ? अरे हट ! पार्टनरशिप खत्म होनी ही चाहिये अब !

मुरार : मेरे बारे में विरोधियों द्वारा फैलाई गई बातों से तुम्हें गलत-

फहमी हो गई है सिदकर ।

सिदकर : तेरे विरोधी साले कौन और कहाँ रहते हैं, हम जानते भी नहीं । अपनी सारी फँमियाँ तो लोगो के कहने से बनी हैं ।

मुरार : लोगोँ का क्या ? ये तो विरोधियों के प्रचार पर से बलि होते हैं...

सिदकर : क्योंकि उनकी हालत तो पहले से ही खराब होती है । उनका जीना तरक बन चुका होता है । उनके बोट निगलकर, उनकी तरफ से भुँह फिराकर राज करने वाले तुम उन लोगोँ को दिखाई देते हो, इसीलिये । चीफ मिनिस्टर ! तुम्हें लगता है कि तुम आँखें बन्द कर लोगे, तो शायद तुम्हें कोई देख नहीं सकेगा । लेकिन लोग देखते हैं—धाकायदा !

मुरार : किसी विरोध करने वाले घन्थेबाज की तरह बोल रहा है तू...

सिदकर : गाली मत दे । हम अपनी तरह से जीते हैं, और बोलते हैं । किडनी दी थी तब भी ऐसे ही जीते थे, वो वापिस माँग रहे हैं, तब भी ऐसे ही जी रहे हैं । अपनी मर्जी से । लोग जो कुछ बोल रहे हैं, वो अगर झूठ हो तो सा माँ की कसम और कह यह सब कुछ झूठ है । कह ना !

मुरार : माँ कसम, यह सब कुछ झूठ है ।

सिदकर : (डिसगस्ट से) अरे रे ! चीफ मिनिस्टर, सत्ता ने तेरे अन्दर के इन्सान को इतना झूठा बना डाला है ? इतना ? माँ की कसम तक खा गया तू ? लोग जो कहते हैं उनमें से ज्यादातर बातें सौ फीसदी सच हैं । उसका प्रमाण पूरा शहर चिल्ला-चिल्लाकर दे रहा है ।

मुरार : बँठ ना । हम कुछ बियर-बियर पीते हैं...

सिदकर : नहीं ! पार्टनरशिप खत्म । (मुरारराव के पेट में उँगलियाँ ठँसाकर) किडनी वापिस दे, घस मा मैं खुद ही निकाल दूँ ?

मुरार : अरे, लेकिन ! कोई आ गया तो...

सिदकर : हम किसी से डरते नहीं । जो अपना है, हम उसे वापिस माँग रहे हैं । साला कोट भी इसमें कुछ नहीं कर सकता ।

मुरार : मैं किठनी वापिस नहीं दूँगा—अगर मैंने ऐसा कहा तो ?

सिदकर : तू कह सकता है । तू चालाक है । मुझसे वचन ले लिया, लेकिन तूने वचन नहीं दिया ।

मुरार : (खुश हो कर) यही तो...

सिदकर : (पेट में से एक अजीब-सा दिखाई देने वाला लोहे का कुछ निकालता है ।)

मुरार : क्या है वो ?

सिदकर : किठनी वापिस पाने का तरीका ।

मुरार : ओः नो !

सिदकर : (वो अजीब-सा हथियार खींचकर लम्बा और लम्बा किये जाता है ।) 'साला एक दम रामबाण !

मुरार : नहीं, नहीं ?

(साइट्स बदलते हैं ।)

सिदकर और उसके अजीब से हथियार की "बिभार" छाया पीछे दिखाई पड़ती है । हथियार चमकने लगता है । सिदकर की आँखें भी चमकने लगती हैं । उनमें पागलपन की झलक है ।)

सिदकर : चलो चीफ मिनिस्टर...

मुरार : नहीं, सिदकर ! सवाल हल करने का यह रास्ता नहीं है—

सिदकर : कमीज ऊपर कर...ऊपर कर कमीज...

मुरार : यह जबरदस्ती हो रही है...

सिदकर : पजामा नीचे कर...चल...किठनी...मेरी किठनी...

मुरार : बचाओ...कीन हूँ उधर...सिदकर इसके लिये प्रधानमंत्री तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेंगे—

सिदकर : अपनी किडनी ले के ही रहूँगा मैं...बस्स...पाटनरशिप खत्म...

(मुरारराव चिल्लाना चाहते हैं, लेकिन गले से कुछ दबी-दबी-सी आवाजें निकलती हैं। सिदकर उनकी तरफ जाने लगता है। मुरारराव की बहुत सम्बी चीख !

मुरारराव जेब से एक आँठ दिखाई देने वाला पिस्तौल निकाल कर सिदकर की तरफ उसका रख किये हुये है। सिदकर आगे आगे बढ़ रहा है। इस सब के साथ "विभार" बैंक ग्राउंड म्यूजिक, जंगली जानवरों की आवाजें वगैरा। मुरारराव आँखें बन्द करके पिस्तौल दागते हैं। पिस्तौल में से पानी की एक बड़ी धारा निकलती है। भीगे हुए सिदकर का ब्रिकेट हास्य। उसके हाथ में वो अजीब हथियार।

मुरारराव पीछे-पीछे हो रहे हैं। भीगे हुए सिदकर को छींक आने लगती है। उसके नाक में कुछ अजीब-सा हो रहा है, उसका ध्यान नहीं है। मुरारराव उसके पेट में घुसा लगाते हैं। सिदकर को जोर से छीक आती है, और मुरारराव इस आवाज से हड़बड़ाकर नीचे बैठ जाते हैं।

सिदकर फिर जोर से हँसता है। अब वह बहुत पास आ चुका है। उसके हाथ में वो अजीब हथियार चमक रहा है। सिदकर की चमकती हुई आँखें। डरे हुए मुरारराव। उनकी सम्बी चीख !

अन्धेरा। म्यूजिक धीमा होता जा रहा है। प्रकाश।...फेड-सा।

फिर मंजुलाबाई आकर स्विच ऑन करती हैं। मुख्यमंत्री की पत्नी को सूट करता हुआ नाईट गाऊन, बालों में काफी पिनो वगैरह। मुरारराव टेबल के पास रसो कुर्सी पर पसीना-यसीना हो कर किसी भ्रम में बैठे हैं।)

मंजुला : क्या हुआ ? यों टारजन की तरह क्यों चिल्लाये ?

मुरार : वो...वो...

मंजुला : कौन वो ?

मुरार : वो...सिद...सिदकर...

मंजुला : सिदकर ! वही जिसने आपको किडनी दी थी ?

मुरार : बाप रे ! भयंकर !

मंजुला : सपना तो नहीं देखा आपने ?

मुरार : (पेट को पकड़े हुए) मेरी किडनी ।

मंजुला : पर हुआ क्या ?

मुरार : वो गया कहाँ ? सिद—सिदकर ?

मंजुला : अजी वो तो कब का मर गया...

मुरार : क्या !

मंजुला : हाँ वही सिदकर न ? वो मर गया । दो महीने हो चुके ।

उसकी जो एक किडनी बच गई थी वो बेकार हो गई थी ।

दूसरी मिली नहीं, इसलिए मर गया । मैंने आपको जानबूझ कर ही नहीं बताया ।

मुरार : (लम्बी साँस छोड़ते हैं ।)

मंजुला : वो सपने में आया था क्या ?

मुरार : बाप रे !

मंजुला : ऐसे टेढ़े-मेढ़े होकर बैठे-बैठे सो जाने से ऐसे ही अनाप-शनाप सपने आते हैं आपको । फिर भी आप ऐसे ही सोते हैं । अन्दर चलकर ठीक से सोइये । चलिए । कोई नहीं है सिदकर-सिदकर । सब आपके खयाली चक्कर हैं । चलिए !

(मुरारराव उठते हैं । अनजाने दोनों हाथ पेट पर । मंजुलाबाई के पीछे वैसे ही चलते हैं । फिर एकदम रुक जाते हैं । खुद-ब-खुद हँसते हैं । हाथ नीचे करके मजे में चलते हुए अन्दर चले जाते हैं । बैंक ग्राउंड पर इस दृश्य को सूट करने वाला पुलिस

बैठ शुरू हो जाता है। मुरारराव के अन्दर चले जाने पर अन्धेरा।

सफेद परदे पर प्रकाश।

पुलिस बैठ शुरू। परदे पर अचकन डाले हुए मुरारराव गाँव ऑफ ऑनर लेते हुए। सीधे खड़े हैं। सलाम करने की मुद्रा में। पेट खासा मोटा दिखाई दे रहा है।

पुलिस बैठ के साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी देर बाद दूर से सुनाई पड़ने वाली तोपों की आवाजें भी सुनाई देने लगती हैं।

क्रमशः अँधेरा।

पुलिस बैठ चालू रहता है।

और तोपों की आवाजें भी।)

परदा का गिरना

□□□







